नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 383, नई दिल्ली, सोमवार 23 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 अंक 3 अंक ज्योतिष में:
06 स्कूल से परे: दीवारों के बिना सीखना
08 पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाअभियान 2026 में सक्रिय भागीदारी

परिवहन विशेष — देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र | parivahanvishesh — India's First Leading English Transport Newspaper | NEWS TRANSPORT VISHESH NTV — www.newstransportvishesh.com

परिवहन विशेष, (द्विभाषी हिंदी और अंग्रेजी दैनिक समाचार पत्र), भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा अनुमोदित समाचार पत्र द्वारा आपको

सौहार्दपूर्ण निमंत्रण

परिवहन विशेष, पत्रकारिता में उत्कृष्टता, जन जागरुकता और राष्ट्रीय विकास के लिए समर्पित एक विशिष्ट मंच।

अपने तीसरे वार्षिक सम्मान समारोह दिनांक: 29 मार्च 2026, समय: दोपहर 1:00 बजे से शाम 6:00 बजे तक, स्थान: मावलंकर हॉल, कॉन्स्टिट्यूशनल क्लब ऑफ इंडिया, नई दिल्ली में अत्यंत गर्व और अपार प्रसन्नता के साथ आपको हार्दिक और सम्मानपूर्वक आमंत्रित करते हैं, आप हमारे कार्यक्रम में शामिल हों।

इस कार्यक्रम में देशभर के प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों, विचारकों, नीति निर्माताओं और प्रमुख हस्तियों की गरिमामय उपस्थिति देखने को मिलेगी।

इस महत्वपूर्ण उपलब्धि का जश्न मनाने और भारत देश में उठे अति ज्वलनशील मुद्दों के हल के प्रति विचार जानने, सुनने और बताने में आपकी उपस्थिति हमारे लिए सम्मान की बात होगी।

ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज द्वारा रजिस्ट्रार ऑफ न्यूज़पेपर्स फॉर इंडिया द्वारा मान्यता प्राप्त दो भाषाओं में संचालित (हिन्दी एवम् इंग्लिश) "परिवहन विशेष" दैनिक समाचार पत्र के तृतीय सालाना सम्मान समारोह दिनांक 29 मार्च (रविवार), समय 1 बजे से 6 बजे स्थान मावलंकर ऑडिटोरियम कांस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया में आप सभी आमंत्रित हैं।

इस वर्ष का वार्षिक सम्मान समारोह भारत देश के ज्वलंतशील मुद्दों पर आधारित है और उसके हल के प्रति समर्पित है।

इसी उद्देश्य की पूर्ति करने के प्रति परिवहन विशेष के प्रबंधक मंडल द्वारा भारत देश के अति विशिष्ट एवम् विशेषज्ञों की राय प्रस्तुत करने हेतु भारत देश की अति विशिष्ट एवम् भारत देश के प्रथम नागरिक के लिए गर्वनीत सर्वोच्च पद पर आसीन एवम् सेवा निवृत राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, गृह मंत्री एवम् सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश कार्यरत एवम् सेवानिवृत्त को ईमेल द्वारा अनुरोध कर उपस्थित होकर अपने विचार रखने का अनुरोध किया है।

कैबिनेट स्तर भारत सरकार के मंत्रियों, दिल्ली परिवहन आयुक्त, दिल्ली पुलिस आयुक्त एवम् अन्य प्रमुख गणमान्य व्यक्तियों से मुलाकात कर इस समारोह में सम्मिलित होकर जनहित में अपने विचार प्रकट करने का अनुरोध किया है।

इस समारोह मे ऊपरलिखित अति विशिष्ट गणमान्यों के अतिरिक्त कई राज्यों के उच्च न्यायालय से सेवा निवृत न्यायाधीश, जिला न्यायालय के पदासिन न्यायाधीश के साथ उच्च स्तरीय सरकारी पदों पर कार्यरत/ सेवानिवृत्त अधिकारी, राजनयिक एवम् राजनीतिज्ञ के साथ साथ अधिवक्ता, समाज कल्याण संस्थाओं के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपस्थित रहकर अपने विचार प्रकट करेंगे।

इस सम्मान समारोह के सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आपका मन मोह लेंगे।

आपकी जानकारी हेतु इस सम्मान समारोह में उपस्थित होने वाले कुछ विशिष्ट गणमान्यों, विशेषज्ञों और समाज सेवा में समर्पित नाम प्रस्तुत कर रहे हैं।

अगर आप भी भारत देश को प्रदूषण मुक्त, दुर्घटना एवं जाम मुक्त, साइबर क्राइम मुक्त और महिला सुरक्षा के प्रति जिम्मेदार नागरिक है और इन मुद्दों को भारत देश से जड़ से खत्म होने पर सहमति रखते हैं तब परिवहन विशेष समाचार पत्र का 29 मार्च रविवार को संपन्न होने वाला यह तीसरा सालाना सम्मान समारोह आपके लिए भी अति विशेष है और आपकी उपस्थिति हमारे लिए।

इस सालाना सम्मान समारोह को अति विशेष कार्यक्रम बनाने के लिए परिवहन विशेष प्रबंधक मंडल के लिए सहयोग में कंधे से कंधा मिलाकर प्रयासरत है, टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत, दिल्ली प्रदेश बंगाली प्रकोष्ठ की पिंकी कुंडू, रक्षा द सेवियर संस्था की अध्यक्ष इंदु राजपूत, सर्व धर्म मित्र मंडल के अध्यक्ष केके छाबड़ा, राजपूत समाज के लिए समर्पित जनसेवक सोबरन सिंह राजपूत, आर के राजपूत, अधिवक्ता संगीता मल्होत्रा तलवार, अधिवक्ता विकासदीप शर्मा एवं अभिषेक राजपूत। परिवहन विशेष प्रबंधक मंडल इनके सहयोग के प्रति आभार प्रकट करती है।

29 मार्च 2026 को परिवहन विशेष समाचार पत्र के तृतीय सालाना सम्मान समारोह में सम्मिलित होकर जनहित में अपने विचार प्रकट करने के लिए उपस्थित होने वाले अति विशिष्ट, विशिष्ट एवम् विशेषज्ञों के विचार जानने के लिए आप सभी आमंत्रित हैं।

इस सम्मान समारोह में "परिवहन विशेष" के प्रबंधक मंडल द्वारा भारत देश के ज्वलंतशील मुद्दों के हल के प्रति विचार प्रकट करने हेतु विशेष रूप से निवेदन पर निम्नलिखित अति आदरणीय की उपस्थिति

कार्यक्रम में अपने मूल्यवान विचार व्यक्त करने हेतु उपस्थित होने वाले अतिथियों की पुष्टि सूची

"Bureaucrats and Govt official"

* Doctor banvari lal ex Chief principal income tax comissioner New delhi
* * Brig Gautam Segan SC SM (Retd), SHAURYA CHAKRA SENA MEDAL.
* Chander Mohan R, IAS (Retd)
* Dr.M.Ravi Kanth, IAS (Retd)
* * Ashish Ujlayan IRTS, Joint Director Business Development Railway Board Ministry of Railways
* VIRENDER SINGH KALSHAIN, Ex-IRS, Deputy Commissioner, CBIC (GST & CUSTOMS) Ministry of Finance, New Delhi
* Dr.R.K.Bhatnagar, Former Commissioner, IAS Retd.
* Dr. Shourjo chatterjee. IA & AS (Retd), Ex Accountant General, Jammu & Kashmir
* Shri Ranjeet Singh IAS Secretary Vidhansabha Delhi
* Sh Hetram Principal staff Officer CBDT
* Dr. Chitralekha Sharma Director Home Ministry Government of India.
* Mr. Nitin Pramod IFS , Director in the Ministry of External Affairs, Delhi
* * . Ashok Kumar, Principal Private Secretary, Prasar Bharati
* Sh Ashok Sexena, Protocol Officer, Ministry of Health
* Suresh Sharma Finance officer, Home ministry
* Mr. Alok kumar Chief General Manager(LPG), Retired, Indian Oil Corporation(Marketing Division), Delhi
* Mr. Ved Prakash ASP, Tihar jail, Honoured two times with Presidential Award Two times (2010, 2021)
* Dr. Dharampal Bhardwaj Chief Fire Brigade (President Awardee)
* Anju randhava, Joint Director
* Bhupinder Singh DANICS
* Mrs. MANJU S KALSHAIN, DANICS (Adhoc), ADMN. OFFICER, Higher Education Department , Government of NCT of Delhi
* Er. Narinder malik, General secretary All India Engineering Association
* Sandeep kumar dey Assistant chemist, Delhi Jal Board
* Mrs. Rashtriya jyoti Lab technician, Delhi jal board
* Rajpal Dahiya, Ministry of External Affairs, ASO, Retired, Assistant Section Officer
* Sh Rahul Gupta, Assistant Engineer CPWD
* Pooran Singh, Superintending Engineer , Ministry of Road Transport and Highways.
* Abhilash Kaimal, Former OSD to Hon'ble Governor of Goa.
* Shri Rajendra Singh Verma, Former General Manager, MECON (India) Limited Government of India — and — Senior Advisor, Ministry of Food and Logistics, Government of India.

" Legal"

* Justice Rajesh Tandon Former judge, Uttarakhand High Court
* Presiding judge, Daily Lok Adalat Nainital High Court UK
* Ravinder Kumar pahuja Spl. Judicial Magistrate first class, High Court of Delhi
* Sh. Dr. K. Venkaresan former civil judge, Tamilnadu Judiciary Chennai
* Naveen Parashar, District Judge, Secretary Law & Legislative Affairs Department, Government of Madhya Pradesh New Delhi
* Suresh Kumar Gupta, Former District Judge Rohini court Delhi, P.O District Consumer Forum Dwarka Delhi
* Deepak Jagotra, Former District Judge, Karkardooma court Delhi, P.O MCD House Tax Appellant Tribunal Delhi
* Dr Adish C Aggarwala President, International Council of Jurists, London
* Ex President, Supreme Court Bar Association
* Dr. Zeeshan Anjum (Life Panel Member SCBA & BAI) Hon'ble Supreme Court of India.
* K K Mannan, Senior Advocate and former chairman bar council of Delhi
* Dr. A.P. Singh Renowned Advocate, Supreme Court
* Sandhya bajaj Advocate Supreme court former Chairman Haryana Handloom Apex former member National Commission for protection of Child Rights A great Social Reform er doing Free legal Advice Working for Children rights
* Mithelesh Panday, National Vice President RPI, Adv Supreme Court of India.
* Sangita Malhotra Talwar Senior panel Counsel Central Government
* Ms. Vikas Jain Advocate & Solicitors Supreme Court of India
* Mr. Abhishek panwar Advocate Supreme Court of India
* Renu Bhatt Dubey, ADV Supreme Court of India
* Shehla Chaudhary Advocate, Supreme Court
* Laxmi Narain Rao Retired Deputy Commissioner of Police, Advocate Delhi High Court
* Rajiv Chatterjee, Advocate High Court, Advocate Secretary, Association of Voluntary Agencies for Rural Development Social crusader
* Mohit Malik Advocate High court
* Vikasdeep Sharma Advocate Supreme Court of India
* Santosh Guleria, Advocate Supreme Court
* D K Sharma, President DBA Tees Hazari court Delhi
* Avnish Rana, President Dwarka District Court Bar Association Delhi
* Dinesh Kumar Mudgil Ex-President Dwarka District Court Bar Association Delhi
* Rajeshwar Dagar, Former Hony. Secretory Dwarka Court Bar Association Delhi
* Surya Prakash Khatri, MLA Timarpur assembly and former Chairman Bar Council of Delhi
* Advocate Deepanshu Devel Delhi High Court

"Social"

* Shri Parvinder Singh Ambassador World Peace Institute United Nation
* * Dr Ramesh Mishra Retd Principal, PHD, Gold Medalist in music by president
* Dr Raj Kumar Yadav National President, "UFTTSA" National United Front (Truck Transport Sarathi)
* Pankaj Nanda National President, Mahadev Sena
* Shri Suresh Sharma founder and National President Jai Hind Manch
* Indu Rajput Chairman Raksha The Saviour
* Safiena Joseph, President Nari Shakti
* Pinki Kundu, National General Secretary, Temple of Liberalization and Welfare Allied Trust
* Sanjay Sharma, National President, Sanatani Hindu Bhagwa Sena
* Mr. Vijay Pore, chairman, Public Devasthan Trust Federation, Maharashtra State (Head Office, Satara)
* Ravi Sharma, National General Secretary – Amit Shah Youth Brigade, Director – Climate and Weather Board – Uttar Pradesh, Nature Welfare Council, Member –* Divya Sharma, District President, Mahila Congress, Director, Uttar Pradesh Plantation Board & Nature Welfare Council, Mrs. India Attitude Crown (20/02/2020), Former Women's Wing President, All India 'Aapki Awaaz' Social Organization (2023)
* Udayan kulshreshtha, Central vice chairman in nature welfare council, Central secretary in anant sewa sansthanam, Central vice chairman in nar narayan sewa trust, Founder and chairman vivache international, Central chairman club vivache
* Quality Council of India, State Secretary – Uttar Pradesh, Bhartiya Shramik Kamgar Karmachari Mahasangh
* Deepak Dhar, President Jai Shree Ram Seva Dal
* Dr. Manoj kumar (Mannu Tomar), President,
* Bhartiya Namo Sangh
* Sushri Rochika Aggarwal President, Vishwa Sanatan Hindu Sangh
* Anil Kumar Verma, President, Blind Persons Organization
* Jathedar Dr. Avtar Singh Former Mayor North Delhi
* Pradeep sharma, Aam admi party Former Mcd elected councillor Former district president And General Secretery delhi congress
* Mr. Jagjeet Singh Goldy Delhi prant sanyojak, Bajrang dal
* Smt. Khulna Laimayum women's cell In Charge North east women cell

PLEASE TURN OVER

परिवहन विशेष RNI No. RNI No :- DELHIN/2023/86499
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र
India's First Leading English Transport Newspaper
parivahanvishesh
NEWS NTV TRANSPORT VISHESH
www.newstransportvishesh.com

परिवहन विशेष, (द्विभाषी हिंदी और अंग्रेजी दैनिक समाचार पत्र), भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा अनुमोदित समाचार पत्र द्वारा आपको

सौहार्दपूर्ण निमंत्रण

कार्यक्रम में अपने मूल्यवान विचार व्यक्त करने हेतु उपस्थित होने वाले अतिथियों की पुष्टि सूची

* Meenakshi Gupta Uttam District Vice President Vishwa Hindu Parishad, Former jilla mantri Seva Bharti, Founder Samarth Blind Welfare Foundation Collaborate with Blind Person Association
* Yamuna prasad Uttam jilla Sanghathan mantri, Vishwa Hindu Parishad
* Meenu Jain, Sah baudhik Pramukh, Rashtra Sevika Samiti, Dilli Prant
* Dr Mukta Girdhar DDMA H. Q Aapda Mitr team
* Tripti Varshney DDMA west P.C Civil Defence Team
* Sudhir Sharma, Advocate, Vice President, Vishwa Hindu Parishad, Noida Metropolitan, General Secretary, Anti-Corruption of India, Uttar Pradesh, National General Secretary, All India Hindu Seva Dal, National Vice President, Bharatiya Shramik Kamgar Maha Sangh, a Bharatiya Janata Party (BJP) affiliate, Member of the Quality Council of India, Ministry of Commerce and Industry, Government of India, Director of Environment, Forest and Climate Change Promotion Council Unit, Nature Welfare Council
* Advocate Poonam Singh, National President of Bhagwan Dattatreya Dham and Women Power and Unity, Vice President of the West District Temple Cell, BJP

" Medical field"

* Dr. Anirban Hom Choudhuri Director Professor & HOD (Critical Care) VMCC & Safdarjung Hospital New Delhi
* Dr. Sanjay Kumar Rai Professor Center for Community Medicine (AIIMS)
* Dr. C.B. Tripathi HOD, Department of Biostatistics, Institute of Human Behavior and Allied Science (IHBAS)
* Dr. Rachna Agarwal Professor & HOD Department of Neurochemistry, Institute of Human Behaviour and Allied Science (IHBAS)
* Dr. Uday Kumar Sinha Professor, Department of Clinical Psychology, institute of Human Behavior and Allied Science (IHBAS)
* Anil Kumar Singh, Asstt CMO IPGCL
* Dr R K Chaubey Ji, CMO NFSG Department of Forensic Medicine and Toxicology, Deen Dayal Upadhyay Hospital

Revered Gurus and Experts in Spiritual Guidance

* Shrimad Jagatguru Shri Brahmamadhav Goreshwaracharya Brajrasik Ji Maharaj Central Chief Patron, Sanatan Dharma Pratinidhi Sabha Member, Central Guidance Council, Vishwa Hindu Parishad
* Arunanda (YAG GURU), Palwal Haryana
* Mahant Yogi Rohtash Nath
* Bramchari Kamleshwarand Maharaj
* Dr. Acharya Manoj Nayyar National President Jyotish Mahasangh
* Dr. N Pujaprasun Professor Numerology Gold medalist
* Parull Bhatnaggar, Astro-Numero-Vastu Expert, Indirapuram, Ghaziabad

"Experts"

* PROF. DR. R.S. NEHRA, Academician. Entrepreneur National Security Educator Visionary Scholar. Strategist
* Yoginder Dagar, DGM (Cyclist)
* Maharaj singh Expert motor vehicle Act and rules
* Dr Veerendra Singh Rathore Deputy Transport Commissioner (Road Safety) Transport and Road Safety Department, Govt of Rajasthan
* Mukesh Dayal ex DTO Delhi Transport Department
* Mr. AJOY SHAH FOUNDER CEO VEDD CONSULTANT - TRAINER COACH & MENTOR , FIELDS OF SALES & MARKETING , COMMUNICATION , TYRE CARE & SAFETY
* Pilot Anil Sharma

"Cultural programs will be presented in the event.

1. Nancy Bathla Singh Ganesh Vandana
2. Mansi Sharma. Vande Mataram
3. Sangeeta Dastidar Saraswati vandana
   Kathak dance
4. Dr Rama Shankar Mishra, Solo song performance
5. Swastika mishra, Solo song performance
6. Jainit mishra, Solo song performance
7. kiran Mishra, Solo song performance
8. Dr. Ranbir Singh Laishram Martial Arts
9. Sapna prajapati Durgavahini Shastra vidhya
10. Drishti choudhary Kathak dance
11. Neil Kundu, Poem on Road Safety
12. Vaibhika Manna, National Anthem
13. Dhruvi garg
    National Anthem
14. Vaishnavi Pawar
    Dance uttarakhand song

Social worker list

* Santosh kumar chaturvedi -8539917550
* Vaibhav Kaushik- 9899444253
* Sandeep batra -9813072976
* Raj kumari devi- 9810950415
* Chhaya Singh-9289406039
* Nidhi Sharma-9355109409
* Virender Kumar Chaturvedi - 7982436532
* Hemraj Gurjar-9560088812
* Swatantar Singh Bhallar- 9811332377
* Neetu yadav-9990866976
* Jitender-9310127688
* Usha Thakur-9971346847
* Roshan-9319486072
* Dr Indu Sharma- 9899408386
* Raunak Raj-9931824663
* Deep mala-6396815202
* Amrit Kalra , 9650170032
* Rachna sahi, Social worker, 8178273812
* Manoj kain, Social worker, 09212763369
* Ritu Verma, Advocate, Social worker
* Dr Vaibhav Deorari, Consultant, BLK centre for Neurosciences, BLK MAX hospital
* Dr Arnesh Bhattacharya, Associate Consultant, BLK centre for Neurosciences, BLK MAX hospital, New Delhi
* Dr Monalisa Bera, Junior Resident, BLK centre for Neurosciences, BLK MAX hospital, New Delhi
* Ms Manisha, Coordinator, BLK centre for Neurosciences, BLK MAX hospital, New Delhi
* Mrityunjay kundu, Social worker
* POOJA Counselling Psychologist 9716739398

Others list / Educators

1. Jai khurana -7291017156 (yoga instructor)
2. Jagdish Chand- 9899190633 (hospital)
3. Rupkishore Rajput Manager, Aman Computer Systems, Kalkaji, New Delhi
4. Ajay Rathi, Senior Athletics coach Haryana govt Sports department
5. Dr. Ranbir Singh Laishram International Gold medalist in Martial Art
6. SURESH KUMAR SINGH, SANSKAR BHARTI HIMACHAL PRADESH, Now DELHI Sanskar Bharti PRASHAR Parchar Pramukh
7. Chanderpal Bairwa, Disst. President, Mehrauli, SC Cell, Bhajpa, Editor, Delhi aur Delhi
8. Amrendra Gupta Sr Correspondent (Political), DD News, Delhi

NGO LIST

* Vikas Kumar Rai, Vaishnavi social work foundation, 8750322043
* K.K Chhabra, Transporters Representative welfare Association Regd, 9910234578
* Sefina Joseph , President of Narri Shakti Woman Welfare charitable trust 7625098270
* Dharmendra Gullaiya Patron , Shri Dharmik sewa sangathan, 9999950556
* Neelima barna Nideshak Swatantrata senani VP Singh Sansthan nideshak udaipur rajasthan, 9079903004
* Dr. Sushma Vashisth, SANKALP CHARITABLE TRUST, 7011670379
* Jitender ahlawat , Treasurer The mellow foundation, 99999 50556
* Ashima NGO SarvaPrana Suddhi Association, Indian Specialised Counselling Academy, 9810582341
* Vikasdeep Sharma, Sarvjan Kalyan Trust
* Yashu Agrawal, Founder, Team we care Trust
* Hira Lal Thakur, President Indira Colony Resident Welfare Association
* Shan Pradhan, Shan Seva Samiti
* Ranjeet Kumar, NGO Aayushman and Viraksh

Literature list

1. Santosh Kumar sharma

2. Dr Varsha Singh

TRANSPORT VISHESH NEWS LIMITED

www.newsparivahan.com, www.newstransport.in

नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 383, नई दिल्ली, सोमवार 23 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 अंक 3 अंक ज्योतिष में: बृहस्पति की शक्ति
06 स्कूल से परे: दीवारों के बिना सीखना
08 पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाअभियान 2026 में सक्रिय भागीदारी

दिल्ली में राष्ट्रीय लोक अदालत का सफल आयोजन, हजारों मामलों के निस्तारण की दिशा में बड़ा कदम

DSLSA और NALSA के मार्गदर्शन में आयोजित लोक अदालत, साकेत कोर्ट में व्यवस्थाओं का निरीक्षण; समावेशी पहल पर विशेष जोर

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली: दिल्ली राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण (डीएसएलएसए) ने राष्ट्रीय कानूनी सेवा प्राधिकरण के मार्गदर्शन में वर्ष 2026 की पहली राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन 22 मार्च को सफलतापूर्वक किया। यह आयोजन दिल्ली के सभी जिला न्यायालय परिसरों, दिल्ली हाई कर्ट स्थायी लोक अदालतों, ऋण वसूली अधिकरण, राज्य उपभोक्ता आयोग और जिला उपभोक्ता आयोगों में एक साथ आयोजित किया गया।

गौरतलब है कि यह लोक अदालत पहले 14 मार्च 2026 को प्रस्तावित थी, लेकिन उस दिन को कार्य दिवस घोषित किए जाने के कारण इसे स्थगित करना पड़ा था। इसके बाद इसे 22 मार्च को आयोजित किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया।इस राष्ट्रीय लोक अदालत में विभिन्न प्रकार के मामलों को शामिल किया गया, जिनमें चेक बाउंस (धारा 138), समझौता योग्य आपराधिक मामले, सिविल विवाद, मोटर दुर्घटना दावा मामले, बैंक वसूली, वैवाहिक विवाद (तलाक को छोड़कर), भूमि अधिग्रहण, श्रम विवाद, मध्यस्थता से जुड़े मामले और ट्रैफिक चालान शामिल थे। इन मामलों के समाधान के लिए सरल और त्वरित प्रक्रिया अपनाई गई, जिससे लोगों को लंबित मामलों से राहत मिलने की उम्मीद है।

लोक अदालत के दौरान वी. कामेश्वर राव, जो दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायाधीश और DSLSA के कार्यकारी अध्यक्ष हैं, ने साकेत न्यायालय परिसर का दौरा किया। उनके साथ गुरविंदर पाल सिंह, निवेदिता अनिल शर्मा और राजीव बंसल भी मौजूद रहे। उन्होंने व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस दौरान न्यायमूर्ति वी. कामेश्वर राव ने ट्रांसजेंडर व्यक्तियों, एसिड अटैक पीड़ितों और वरिष्ठ नागरिकों को विशेष रूप से सम्मानित किया, जो लोक अदालत में एसोसिएट सदस्य के रूप में कार्य कर रहे थे। यह पहल DSLSA की समावेशी सोच और समाज के कमजोर वर्गों को सशक्त बनाने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

सदस्य सचिव राजीव बंसल ने बताया कि DSLSA लगातार वैकल्पिक विवाद समाधान (ADR) प्रणाली को बढ़ावा देने के लिए काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय लोक अदालत आपसी समझौते के जरिए विवादों के त्वरित निपटारे का एक प्रभावी मंच है। इस बार लोक अदालत में ट्रांसजेंडर, वरिष्ठ नागरिक, दिव्यांगजन, उत्तर-पूर्व क्षेत्र के लोग और एसिड अटैक पीड़ितों की भागीदारी भी सुनिश्चित की गई।

इस पहल का मुख्य उद्देश्य न्याय सेवाओं को अधिक सुलभ और प्रभावी बनाना है, विशेष रूप से ट्रैफिक चालानों जैसे लंबित मामलों के त्वरित निस्तारण के लिए। दिल्ली के लोगों ने इस लोक अदालत में उत्साहपूर्वक भाग लिया और इसकी सरल प्रक्रिया की सराहना की।

डिजिटल ट्रैफिक लोक अदालत प्रणाली के तहत लोगों को तुरंत अपडेट और मोबाइल पर एसएमएस के माध्यम से पुष्टि मिलती रही, जिससे उन्हें लंबी कतारों में लगने से राहत मिली। न्यायिक अधिकारियों ने इस पहल को न्याय प्रणाली को अधिक पारदर्शी और सुलभ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया।व्यवस्थाओं को सुचारु बनाए रखने के लिए सभी न्यायालय परिसरों में हेल्प डेस्क, व्हीलचेयर, रैंप, पेयजल और शौचालय जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई गईं। सुरक्षा के भी व्यापक इंतजाम किए गए थे, ताकि किसी भी प्रकार की अव्यवस्था न हो।राष्ट्रीय लोक अदालत के निस्तारण से जुड़े अंतिम आंकड़े रात 9 बजे तक जारी किए जाने की संभावना है, जिससे इस बड़े आयोजन की सफलता का स्पष्ट आकलन हो सकेगा।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार

पिंकी कुंडू

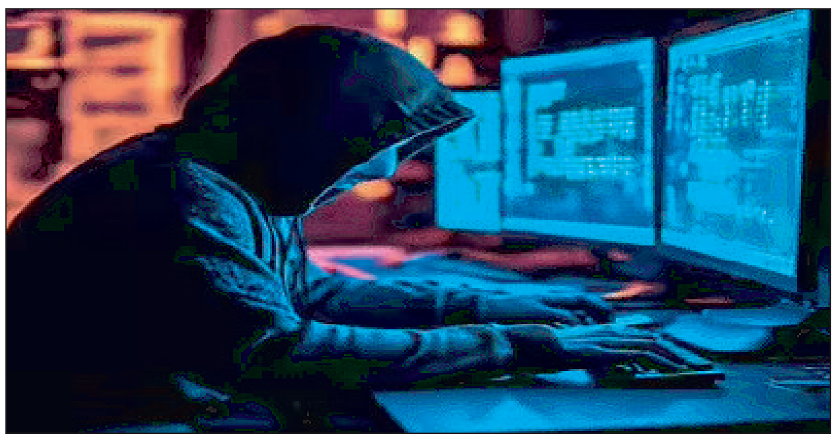

बॉम्बे हाई कोर्ट ने यह टिप्पणी की कि म्यूल अकाउंट धारकों को जमानत देने से धोखेबाज़ों का हौसला बढ़ सकता है और निवारक प्रभाव कमज़ोर पड़ सकता है।

सामान्य धोखाधड़ी मामलों में, जो स्कैम हब्स से उत्पन्न होते हैं, म्यूल अकाउंट अवैध धन के प्रवाह के लिए माध्यम बनकर फल-फूल रहे हैं।

न्यायालय की प्रमुख टिप्पणियाँ

- म्यूल अकाउंट से जुड़े धोखाधड़ी मामलों को गंभीरता से लिया जाना चाहिए।
- जमानत देने से नरमी का संदेश जाएगा और आगे धोखाधड़ी को बढ़ावा मिलेगा।
- न्यायपालिका ने नागरिकों और वित्तीय प्रणाली की सुरक्षा के लिए इन स्कैम्स के पीछे के लोगों पर सख्ती से कार्रवाई करने की आवश्यकता पर बल दिया।

धोखाधड़ी नेटवर्क में म्यूल अकाउंट क्यों अहम हैं

- परिभाषा: म्यूल अकाउंट वे बैंक खाते हैं जिनका उपयोग धोखेबाज़ अवैध धन प्राप्त करने, स्थानांतरित करने या निकालने के लिए करते हैं।
- **भूमिका:**
  - o धन के स्रोत को छिपाने के लिए मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हैं।
  - o अक्सर झूठे बहानों से भर्ती किए गए या दबाव में आए व्यक्तियों द्वारा संचालित होते हैं।
  - o कई खातों में लेन-देन फैलाकर धोखाधड़ी गिरोहों को पकड़ से बचने में मदद करते हैं।

न्यायालय की टिप्पणी के निहितार्थ

- **कानून प्रवर्तन के लिए:**
  - o म्यूल अकाउंट का पता लगाने के लिए मज़बूत जांच प्रोटोकॉल।
  - o बैंकों और वित्तीय संस्थानों के साथ समन्वय कर संदिग्ध खातों को तुरंत फ्रीज़ करना।
  - o स्कैम हब्स का पता लगाने के लिए साइबर अपराध निगरानी को बढ़ाना।
- **नागरिकों के लिए:**
  - o जागरूकता अभियान ताकि लोग अनजाने में मनी म्यूल न बनें।
  - o संदिग्ध ऑफ़र (जैसे "आसान पैसा" वाली नौकरियाँ जिनमें बैंक खाते का उपयोग करना हो) की रिपोर्ट करने के लिए प्रोत्साहन।
- **न्यायपालिका के लिए:**
  - o गंभीर धोखाधड़ी मामलों में जमानत को सावधानीपूर्वक देखने का मिसाल स्थापित करना।
  - o यह सिद्धांत मज़बूत करना कि धोखाधड़ी वित्तीय प्रणाली में जनता के विश्वास को कमजोर करती है।

जोखिम और चुनौतियाँ

- संचालन जोखिम: स्कैम हब्स अक्सर सीमाओं के पार काम करते हैं, जिससे जांच जटिल हो जाती है।
- कानूनी जोखिम: जानबूझकर म्यूल गतिविधि करने वालों और दबाव में आए पीड़ितों में अंतर करना कठिन।
- जन जोखिम: यदि जमानत आसानी से दी जाती है, तो धोखेबाज़ संचालन जारी रख सकते हैं और कानून प्रवर्तन पर विश्वास घट सकता है।

व्यवहारिक सिफारिशें

- बैंक: KYC मानकों को मज़बूत करें और असामान्य लेन-देन पैटर्न को चिन्हित करें।
- नागरिक: अपने खाते का विवरण साझा करने या तीसरे पक्ष को उपयोग करने की अनुमति देने से बचें।

40 साल बाद दिल्ली में चली डबल डेकर बस की राह रोक रही लुटियंस की हरियाली, NDMC से नियमित छंटाई की मांग

दिल्ली में 40 साल बाद शुरू हुई डबल डेकर बसों को लुटियंस दिल्ली की हरियाली से चुनौती मिल रही है। सामान्य बसों से अधिक ऊंची होने के कारण पेड़ों की लटकती डालियां बसों को खरोंच रही हैं। विभिन्न मार्गों पर संचालन के बावजूद, नियमित छंटाई की आवश्यकता है।

नई दिल्ली। दिल्ली की सड़कों पर करीब 40 वर्ष बाद उतरी डबल डेकर बस को लेकर लोगों में खासा उत्साह है, पर उसके संचालन में लुटियंस दिल्ली की हरियाली आड़े आ रही है। दिल्ली हाट आईएनए से संसद मार्ग के आस-पास से लेकर चाणक्यपुरी स्थित प्रधानमंत्री संग्रहालय तक की बस यात्रा के बीच में फुटपाथ व डिवाइडर के पेड़ों की डालियों से नुकसान पहुंच रहा है। यह इसलिए क्योंकि, इस बस की लंबाई डीटीसी की सामान्य एसी बसों की तुलना में एक मीटर अधिक ऊंची है। उसके चलते बस के दोनों तरफ के शीशों में खरोच आ रही है।

विभिन्न मार्गों का सर्वेक्षण कर एक रूट तैयार किया

वैसे, डबल डेकर बस चालक को निर्देश है कि वह बस की ऊंचाई के मद्देनजर उसे सड़क के मध्य से गुजारे, लेकिन दिक्कत यह कि डालियां बीच सड़क तक झुकी हुई है। डबल डेकर बस की ऊंचाई करीब 4.75 मीटर है, जबकि डीटीसी की सामान्य एसी बसों की ऊंचाई 3.8 मीटर है। यह बस पिछले माह सड़क पर उतरी है। जिसका संचालन पर्यटन विभाग द्वारा किया जा रहा है। दिल्ली पर्यटन व परिवहन विकास निगम (डीटीटीडीसी) के एक अधिकारी ने बताया कि बस के संचालन से पूर्व एनडीएमसी व यातायात पुलिस को साथ लेकर एक रोडमैप भी बनाया गया था, जिसमें विभिन्न मार्गों का सर्वेक्षण कर एक रूट तैयार किया गया है।

पेड़ों की लटकती डालियां बनीं मुसीबत

इसमें ट्रैफिक लाइट्स के किनारे होने या बस की ऊंचाई से ऊपर होने, कोई और अवरोध न होने जैसे कई अन्य व्यवस्थाओं का बारिकी से मूल्यांकन किया गया था।फिलवक्त, डबल डेकर बस श्री अरविंदो मार्ग, तुगलक रोड, कृष्णा मेनन मार्ग, रफी मार्ग, जनपथ मार्ग व तीन मूर्ति मार्ग समेत अन्य मार्गों पर गुजर रहा है। जहां पेड़ों की लटकती डालियां डबल डेकर बस के आड़े आ रही है।

अधिकारी के अनुसार, यात्रा का शुभारंभ करने से पूर्व भी रास्ते में पड़ने वाली डालियों की छंटाई हुई थी, लेकिन यह बढ़ती रहती है। वर्षा की स्थिति में यह और लटक जाती है। उसके नियमित छंटाई की आवश्यकता है, जिसके लिए एनडीएमसी से आग्रह किया गया है।

साप्ताहिकी अंकशास्त्र

अंक 3 अंक ज्योतिष में: बृहस्पति की शक्ति

डॉ. पूजाप्रसुन एन
गोल्ड मेडलिस्ट
Shivoham Shastr
shivohamshastr.com
09599101326, 07303855446

1. अंक 3 का मूल महत्व:

अंक 3 का स्वामी बृहस्पति (गुरु) है, जो ज्ञान, बुद्धि, विस्तार, धर्म (धार्मिकता) और मार्गदर्शन का ग्रह है।

यह अंक दर्शाता है:
रचनात्मकता और अभिव्यक्ति,
बुद्धिमत्ता और उच्च शिक्षा,
विकास और विस्तार,
नैतिक मूल्य और अनुशासन,

इसे एक अत्यंत शुभ और सात्विक अंक माना जाता है, जो दिव्य आशीर्वाद और संरक्षण से जुड़ा होता है।

अंक 3 से प्रभावित व्यक्ति अक्सर प्राकृतिक रूप से शिक्षक, नेता, सलाहकार या आध्यात्मिक मार्गदर्शक बनते हैं।

2. जब अंक 3 (बृहस्पति) मजबूत / सकारात्मक होता है:

जब बृहस्पति अंक ज्योतिष में मजबूत होता है (जन्म अंक, भाग्य अंक या नाम के माध्यम से), तब यह शक्तिशाली सकारात्मक प्रभाव देता है।

व्यक्तित्व गुण:
ऐसे व्यक्ति होते हैं:
बुद्धिमान और ज्ञानी,
नैतिक और सिद्धांतवादी,
आत्मविश्वासी लेकिन संतुलित,
उदार और दयालु,
स्वाभाविक रूप से नेतृत्व करने वाले,

इनमें सही और गलत की मजबूत समझ होती है और समाज में इन्हें सम्मान मिलता है।

करियर और सफलता:
मजबूत अंक 3 देता है:
शिक्षा, कानून, प्रशासन, लेखन और आध्यात्मिक क्षेत्र में सफलता,
सरकारी या संस्थागत उच्च पद,
पहचान, प्रसिद्धि और सम्मान,
उत्कृष्ट निर्णय लेने की क्षमता।

आर्थिक प्रभाव:
स्थिर और निरंतर आर्थिक वृद्धि,
ज्ञान, शिक्षण या सलाहकार कार्य से लाभ,
भाग्य विस्तार और समृद्धि में सहयोग करता है।

संबंध:
वफादार और जिम्मेदार जीवनसाथी,
मजबूत पारिवारिक मूल्य,
संबंधों में मार्गदर्शक और रक्षक की भूमिका।

आध्यात्मिक विकास:
धर्म और दर्शन में गहरी रुचि,
गुरु या मार्गदर्शक से मजबूत जुड़ाव,
धर्म और सत्य मार्ग की ओर झुकाव,

सार रूप में, मजबूत अंक 3 व्यक्ति को सफल, सम्मानित, बुद्धिमान और भाग्यशाली बनाता है।

3. जब अंक 3 (बृहस्पति) कमजोर / नकारात्मक होता है:

जब बृहस्पति की ऊर्जा कमजोर या असंतुलित होती है, तब इसके नकारात्मक गुण दिखाई देने लगते हैं।

व्यक्तित्व समस्याएँ:
अहंकार और घमंड,
वास्तविक ज्ञान के बिना अधिक आत्मविश्वास,
अनुशासन की कमी,
दूसरों को सलाह देना लेकिन खुद पालन न करना,
ज्ञान का दुरुपयोग।

करियर समस्याएँ:
सफलता में देरी,
दिशा या उद्देश्य की कमी,
नेतृत्व में असफलता,
गलत निर्णय और कमजोर विवेक।

आर्थिक समस्याएँ:
गलत योजना के कारण नुकसान,
अत्यधिक विस्तार से कर्ज,
आर्थिक अस्थिरता।

संबंध समस्याएँ:
हावी या नियंत्रित करने वाला व्यवहार,
अहंकार के कारण टकराव,
भावनात्मक संवेदनशीलता की कमी।

आध्यात्मिक और मानसिक प्रभाव:
विश्वास में भ्रम,
गलत गुरु या मार्गदर्शन का पालन,
आस्था की कमी या आध्यात्मिक ज्ञान का दुरुपयोग।

कमजोर अंक 3 रुकी हुई प्रगति, गलत निर्णय और अहंकार से जुड़ी समस्याएँ देता है।

4. संकेत कि बृहस्पति (अंक 3) कमजोर है:

आप निम्न संकेत देख सकते हैं:
मेहनत के बावजूद बार-बार असफलता,
सही मार्गदर्शन या गुरु का अभाव,
लोगों से सम्मान न मिलना,
उच्च शिक्षा में समस्याएँ,
कानूनी या नैतिक परेशानियाँ,
लिवर या वजन से संबंधित स्वास्थ्य समस्याएँ।

5. अंक 3 (बृहस्पति) को मजबूत करने के उपाय:

आध्यात्मिक उपाय:
भगवान विष्णु या बृहस्पति (गुरु) की पूजा करें,

प्रतिदिन या गुरुवार को मंत्र जाप करें:
"ॐ बृं बृहस्पतये नमः" (108 बार)
धार्मिक या आध्यात्मिक ग्रंथों का अध्ययन करें।

जीवनशैली उपाय:
गुरु, शिक्षक और बड़ों का सम्मान करें,
हमेशा सत्य और नैतिकता का पालन करें,
अहंकार और घमंड पर नियंत्रण रखें
प्रतिदिन कृतज्ञता का अभ्यास करें।

दान (बहुत प्रभावी):
गुरुवार को:
पीली वस्तुएं दान करें (हल्दी, चना दाल, केले),
शिक्षकों, छात्रों या ब्राह्मणों की सहायता करें,
गाय या जरूरतमंद लोगों को भोजन कराएं।

रंग और वस्त्र:
पीले, सुनहरे या हल्के नारंगी रंग पहनें,
गुरुवार को अधिक काले रंग से बचें।

भोजन आदतें:
सात्विक भोजन करें,
आहार में हल्दी और पीले खाद्य पदार्थ शामिल करें,
गुरुवार को शराब और मांसाहार से बचें।

रत्न उपाय:
पुखराज (Yellow Sapphire),
सोने में तर्जनी उंगली में पहनें,
गुरुवार सुबह उचित सलाह के बाद धारण करें।

नाम सुधार (उन्नत उपाय):
नाम के कंपन को अंक 3 के अनुरूप करें
"Ra", "Na", "Ya", "Ha" जैसे ध्वनियों का उपयोग करें।

6. अंक 3 से संबंधित व्यवसाय:

मजबूत अंक 3 वाले लोग सफल होते हैं:
शिक्षा और शिक्षण में,
कानून और न्यायपालिका में,
सरकारी सेवाओं में,
लेखन और दर्शन में,
आध्यात्मिक या धार्मिक कार्यों में,
परामर्श और सलाहकार कार्यों में।

7. अंतिम समझ:

अंक 3 दर्शाता है दिव्य ज्ञान, विस्तार और मार्गदर्शन।

जब यह मजबूत होता है, तो देता है:
सम्मान,
सफलता,
ज्ञान,
नेतृत्व।

जब यह कमजोर होता है, तो देता है:
अहंकार की समस्या,
भ्रम,
देरी और असफलता।

निष्कर्ष:

अंक 3 की वास्तविक शक्ति इस संतुलन में है:

लेफ्टिनेंट अमित सिंह की गांव नोगावा में राजकीय सम्मान के साथ अंत्येष्टि

ग्रामीणों ने नम आंखों से दी वीर सपूत को अंतिम विदाई

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 22 मार्च। जिला के गांव नौगांवा के वीर सपूत लेफ्टिनेंट अमित सिंह को रविवार सायं पूरे राजकीय सम्मान के साथ अंतिम विदाई दी गई। जैसे ही वीर सपूत अमित जाखड़ का पार्थिव शरीर गांव पहुंचा, पूरे क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई। हजारों की संख्या में उमड़े जनसमूह ने नम आंखों से अपने लाल को अंतिम विदाई दी और "भारत माता की जय" व "अमित सिंह अमर रहें" के नारों से वातावरण गूंज उठा।

प्राप्त जानकारी के अनुसार लेफ्टिनेंट अमित महाराष्ट्र के बेलगांव में ट्रेनिंग के दौरान उनका आकस्मिक निधन हो गया। उनके निधन की खबर मिलते ही परिवार, नौगांवा गांव तथा पूरे क्षेत्र में गहरा शोक की लहर दौड़ गई।

लेफ्टिनेंट अमित सिंह 23 अप्रैल 2021 को भारतीय सेना में भर्ती हुए थे।

शहीद अमित सिंह अपने माता-पिता के इकलौते पुत्र थे। उनके पिता राजसिंह भारतीय सेना से सेवानिवृत्त हैं और परिवार का सेना से गहरा जुड़ाव रहा है। पुत्र की शहादत से परिवार को जहां अपार दुख पहुंचा है।

लेफ्टिनेंट अमित सिंह के पार्थिव शरीर पर यूनिट 8 मद्रास से कर्नल दिनेश, लेफ्टिनेंट कर्नल हरीश बूरा, मेजर प्रणय मित्तल, राहुल मलिक, सूबेदार सी.डी. रेड्डी, हवलदार कृष्ण कुमार ने पुष्प चक्र चढ़ाकर नमन किया। वहीं

जिला प्रशासन की ओर से बीडीपीओ मातनहेल अंजली शर्मा, नायब तहसीलदार नवदीप, जिला सैनिक बोर्ड झज्जर से बिजेंद्र सिंह, रोहतास सिंह, सुकरमपाल तथा अजय कुमार के अलावा

पूर्व जिला पार्षद राकेश जाखड़, पार्षद अनिल पहलवान नौगामा, सरपंच अजय कुमार सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों एवं क्षेत्रवासियों ने अंतिम यात्रा में भाग लेकर आंखों से अंतिम विदाई दी।

हरियाणा के पहलवानों ने किया विश्व पटल पर किया देश का नाम रोशन : डीसी

जाखोदा स्थित सोनू अखाड़े में आयोजित कुश्ती प्रतियोगिता में पहुंचे डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल

परिवहन विशेष न्यूज

सरकार खेल और खिलाड़ियों को निरंतर कर रही प्रोत्साहित– बोले डीसी

बहादुरगढ़, 22 मार्च। हरियाणा के पहलवानों ने विश्व पटल पर आयोजित कुश्ती प्रतियोगिताओं में हमेशा देश का नाम रोशन किया है। जाखोदा स्थित हिंद केसरी सोनू अखाड़े में आयोजित विशाल कुश्ती दंगल में मौजूद पहलवानों को प्रोत्साहित करते हुए यह बात कही। उन्होंने कहा कि कुश्ती पारंपरिक खेल है और हरियाणा इसमें निसंदेह सबसे अग्रणी है। कुश्ती और कबड्डी हरियाणा की शान माने जाते हैं। उन्होंने कहा कि सरकार ने खेल और खिलाड़ियों को आगे बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास किए हैं। विजेताओं को नकद इनाम के साथ सरकारी नौकरी देकर उनका भविष्य भी सुरक्षित कर रही है

डीसी ने कहा कि खेल खासकर कुश्ती और कबड्डी हरियाणा की पहचान है। उन्होंने कहा कि जो क्षेत्र खेलो में आगे होगा वह निश्चित रूप से अन्य क्षेत्रों में भी आगे बढ़ेगा। डीसी ने दंगल में मौजूद क्षेत्र की सरदारी से आह्वान करते हुए कहा कि आपसी भाईचारा बहुत बड़ी बात है।आपसी भाईचारा ठीक ठाक रहने से समाज हर क्षेत्र में आगे बढ़ता है। नशा जैसी आदतों से युवा दूर रहता है। विकास कार्यों में तेजी आती है। ऐसे आयोजनों से युवा पीढ़ी में भी सामाजिक भाईचारे के संस्कार पहुंचते है। युवा पीढ़ी को विजेता पहलवानों से खेलों में अपना भविष्य बनाने की प्रेरणा मिलती है।

कार्यक्रम में पहुंचने पर आयोजकों ने मुख्यातिथि डीसी स्वप्निल रविंद पाटिल और एसडीएम बहादुरगढ़ अभिनव सिवाच का पगड़ी बांधकर स्वागत किया।एचएल सिटी के निदेशक राकेश जून ने अपनी नेक कमाई से अखाड़े के लिए 21 लाख रुपए की धनराशि देने की घोषणा की।

इस अवसर पर क्षेत्र की सरदारी, पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष राजपाल जांगडा, आयोजक अर्जुन अवार्डी धर्मेंद्र दलाल,हिंद केसरी सोनू पहलवान, एचएल सिटी के निदेशक राकेश जून, कोच, पहलवान और कुश्ती प्रेमी मौजूद रहे।

जिले झज्जर में एलपीजी की निर्बाध आपूर्ति जारी

सोमवार को अवकाश के बावजूद होगी होम डिलीवरी : डीसी

झज्जर, 22 मार्च। डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने जिलावासियों को आश्वस्त किया है कि झज्जर जिले में एलपीजी गैस की कोई कमी नहीं है और उपभोक्ताओं को लगातार सिलेंडरों की डिलीवरी दी जा रही है। उन्होंने स्पष्ट किया कि जिला प्रशासन आपूर्ति व्यवस्था पर पैनी नजर रखे हुए है और जो भी असामाजिक तत्व चोरी-छिपे गैस की कालाबाजारी करने की कोशिश कर रहे हैं, उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई अमल में लाई जा रही है।

उन्होंने बताया कि विभिन्न स्थानों पर छापेमारी कर अवैध रूप से रखे गए सिलेंडर भी निरन्तर जब्त किए जा रहे हैं।

डीसी ने बताया कि वर्तमान में किसी भी गैस एजेंसी पर भीड़ की स्थिति नहीं है क्योंकि होम डिलीवरी की व्यवस्था सुचारू रूप से चालू है। विशेष रूप से, कल सोमवार को गैस एजेंसियों का नियमित अवकाश होने के बावजूद जनता की सुविधा के लिए होम डिलीवरी सेवा जारी रहेगी।

दूसरी ओर जिला खाद्य आपूर्ति नियंत्रक राजेश्वर मुदगिल ने जिले की विभिन्न गैस एजेंसियों की ताजा स्थिति साझा करते हुए बताया कि 21 मार्च को शाम 5 बजे तक जिले में कुल 7300 सिलेंडरों का स्टॉक उपलब्ध था। इसमें से बुकिंग के अनुसार सिलेंडरों की डिलीवरी सुनिश्चित की गई है।

व्यावसायिक सिलेंडरों के संदर्भ में उन्होंने बताया कि शादियों और सरकारी कार्यों के लिए मांग अनुसार आपूर्ति प्राप्त हुई है और संबंधित आवेदकों को इस बारे में सूचित किया जा रहा है। अब तक जिला झज्जर में 45 गैस सिलेंडर कमर्शियल शादी समारोह के लिए उपलब्ध करवाए जा चुके हैं वह इसके अतिरिक्त प्राप्त हो रहे आवेदनों पर लगातार सप्लाई उपलब्ध कराने वाले गैस कंपनियों से पत्राचार जारी है।।

उन्होंने कहा कि प्रशासन का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रत्येक पात्र उपभोक्ता को बिना किसी असुविधा के समय पर रसोई गैस प्राप्त हो सके।

सहायक खाद्य आपूर्ति अधिकारी बहादुरगढ़ व झज्जर ने किया गैस एजेंसियों का औचक निरीक्षण

खाद्य आपूर्ति विभाग के सहायक खाद्य आपूर्ति अधिकारी झज्जर अमरजीत सिंह व सपना देवी ने जिले के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा कर गैस एजेंसियों के स्टॉक और वितरण रजिस्टर का गहन निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने एजेंसी संचालकों को कड़े निर्देश दिए कि वे उपभोक्ताओं के साथ शालीन व्यवहार करें और होम डिलीवरी में किसी भी प्रकार की देरी न होने दें। उन्होंने स्पष्ट किया कि लापरवाही बरतने वाली एजेंसियों के विरुद्ध विभागीय कार्रवाई अमल में लाई जाएगी ।

जिसके खिलाफ कार्रवाई, क्या वही करेगा सुनवाई ? — नगर परिषद बरवाला के अधिकारियों के खिलाफ भ्रष्टाचार पर एडवोकेट प्रतीक कथूरिया डटे 24 मार्च को नगर परिषद बरवाला मे सुनवाई

हरियाणा हिसार :राजेश सलूजा

नगर परिषद बरवाला में कथित अनियमितताओं और भ्रष्टाचार के आरोपों को लेकर एडवोकेट प्रतीक कथूरिया द्वारा की गई शिकायत अब एक महत्वपूर्ण मोड़ पर पहुंच गई है। जिस मामले को लेकर शिकायत दर्ज करवाई गई थी, उसी पर अब विभागीय स्तर पर सुनवाई की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है, जिससे पूरे प्रकरण में पारदर्शिता और जवाबदेही को लेकर नई उम्मीद जगी है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, एडवोकेट प्रतीक कथूरिया ने नगर परिषद बरवाला में भ्रष्टाचार और अनियमितताओं से संबंधित शिकायत दर्ज करवाई थी। यह शिकायत हरियाणा शहरी स्थानीय निकाय विभाग, पंचकूला स्थित निदेशक (Director, Urban Local Bodies, Haryana) के समक्ष अभियोजन स्वीकृति (Sanction for Prosecution) प्राप्त करने हेतु विधिवत रूप से प्रस्तुत की गई थी। उक्त शिकायत भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की धारा 19 के अंतर्गत विचाराधीन है, जिसमें संबंधित अधिकारियों के विरुद्ध अभियोजन की अनुमति मांगी गई है।

इसी क्रम में, विभागीय प्रक्रिया के तहत नगर परिषद बरवाला प्रशासन द्वारा 24 मार्च 2026 को प्रातः 10:00 बजे परिषद कार्यालय में निजी सुनवाई निर्धारित की गई है और शिकायतकर्ता को सभी आवश्यक दस्तावेजों सहित उपस्थित होने के निर्देश दिए गए हैं।

इस पूरे घटनाक्रम में एक बड़ा सवाल उभर कर सामने आया है—जिसके खिलाफ कार्रवाई प्रस्तावित है, क्या वही विभाग सुनवाई करेगा?

इस पहलू को लेकर कानूनी और प्रशासनिक हलकों में चर्चा तेज हो गई है।

एडवोकेट प्रतीक कथूरिया का कहना है कि उनका उद्देश्य केवल सच्चाई को सामने लाना और प्रक्रिया को कानून के अनुसार आगे बढ़ाना है। उन्होंने स्पष्ट किया कि वे इस मामले को पूरी गंभीरता से आगे बढ़ा रहे हैं और न्याय सुनिश्चित कराने के लिए हर आवश्यक कानूनी कदम उठाएंगे।

यह पूरा प्रकरण अब क्षेत्र में चर्चा का विषय बन गया है और इसे एक ऐसे उदाहरण के रूप में देखा जा रहा है, जहां एक जागरूक एडवोकेट की पहल ने प्रशासनिक व्यवस्था को सक्रिय होने पर मजबूर किया।

आमजन की निगाहें अब आगामी सुनवाई पर टिकी हुई हैं, जहां इस मामले में आगे की दिशा तय होगी और पारदर्शिता की इस लड़ाई का अगला चरण सामने आएगा।

ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल उकलाना में गूँजी सफलता की गूँज:

भव्य समारोह में बँटे स्कॉलरशिप सर्टिफिकेट

हरियाणा हिसारः राजेश सलूजा

शिक्षा के क्षेत्र में नित नए कीर्तिमान स्थापित कर रहे ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल, उकलाना के प्रांगण में बीते दिन एक भव्य 'स्कॉलरशिप सर्टिफिकेट वितरण समारोह' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में उन सभी मेधावी छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, जिन्होंने हाल ही में आयोजित स्कॉलरशिप टेस्ट में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया था। समारोह की खास बात यह रही कि विद्यार्थी अपने अभिभावकों के साथ इस गौरवपूर्ण क्षण के साक्षी बने। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए ऑक्सफोर्ड ग्रुप ऑफ स्कूल्स के अध्यक्ष डॉ. सतीश भारती ने विद्यालय का भविष्योन्मुखी विजन साझा किया। उन्होंने घोषणा की कि ऑक्सफोर्ड स्कूल ने एम्बीशन इंस्टीट्यूट, हिसार के साथ हाथ मिलाया है।

अब विद्यार्थियों को स्कूल स्तर से ही प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार किया जाएगा। NEET, JEE और अन्य कॉम्पिटिशन एग्जाम्स की तैयारी के लिए अब बच्चों को दूर दराज के शहरों में जाने की आवश्यकता नहीं होगी। डॉ. भारती ने विश्वास दिलाया कि जो सुविधाएं बड़े शहरों के बड़े संस्थानों में मिलती हैं, वही अब उकलाना में उपलब्ध होंगी।मंच का सफल संचालन याचिका मैडम द्वारा किया गया। उनकी मधुर आवाज और ओजपूर्ण शैली ने पूरे कार्यक्रम में समां बाँध दिया। इस अवसर पर विद्यालय के एकेडमिक कोऑर्डिनेटर राकेश नैन और

मार्केटिंग हेड गणेश मेहता ने भी अभिभावकों को संबोधित किया। उन्होंने विद्यालय की नई पहल के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि कैसे यह कदम बच्चों के करियर को नई ऊंचाइयां प्रदान करेगा।

स्कॉलरशिप टेस्ट क्वालीफाई करने वाले विद्यार्थियों को उनके अभिभावकों सहित मंच पर आमंत्रित किया गया। स्कूल प्रबंधन द्वारा उन्हें स्कॉलरशिप सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया। अपने बच्चों की इस उपलब्धि पर अभिभावकों की आँखों में गर्व के आँसू और चेहरे पर मुस्कान साफ देखी जा सकती थी।

उपस्थित अभिभावकों ने ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल उकलाना की इस पहल की मुक्तकंठ से प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि विद्यालय मैनेजमेंट का यह निर्णय सराहनीय है कि उनके बच्चों को घर के पास ही विश्वस्तरीय और अत्याधुनिक शैक्षणिक सुविधाएं प्राप्त हो रही हैं। इस अवसर पर अभीभावको और विद्यार्थियों के सम्मान में खान-पान की व्यवस्था भी की गई।

बरवाला में विशाल रक्तदान शिविर आयोजित, कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा ने रक्तदाताओं का हौसला बढ़ाया

हरियाणा हिसार: राजेश सलूजा

बरवाला स्थित कुम्हार धर्मशाला में रविवार को माटी कला बोर्ड के चेयरमैन रहे स्वर्गीय ईश्वर सिंह मालवाल की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर विशाल रक्तदान शिविर एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में हरियाणा के लोक निर्माण एवं जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री रणबीर गंगवा ने रक्तदाताओं का हौसला बढ़ाया। ईश्वर मालवाल मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित इस शिविर में क्षेत्र के गणमान्य नागरिकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और युवाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। रक्तदान शिविर में बड़ी संख्या में लोगों ने रक्तदान कर मानवता की सेवा का संदेश दिया।

श्रद्धांजलि सभा में वक्ताओं ने स्वर्गीय ईश्वर सिंह मालवाल के सामाजिक योगदान को याद करते हुए कहा कि वे हरियाणा माटी कला बोर्ड के पूर्व चेयरमैन रहते हुए समाज के उत्थान के लिए निरंतर कार्य करते रहे।

मंत्री रणबीर गंगवा ने अपने संबोधन में कहा कि रक्तदान महादान है और इस तरह के आयोजनों से समाज में जागरूकता बढ़ती है। उन्होंने आयोजकों के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रम समाज को जोड़ने का कार्य करते हैं।

कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा ने तलवंडी रुक्का में भामाशाह ठाकुर स्वर्गीय रघुबीर सिंह भाटी की द्वितीय पुण्यतिथि पर आयोजित विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों में भी शिरकत की। उन्होंने वृक्षारोपण, गौसेवा एवं श्री रामदेव जी सरोवर का उद्घाटन किया गया।

इसके अलावा, जनसेवा की भावना को आगे बढ़ाते हुए विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भाटी परिवार द्वारा एम्बुलेंस भी जनसमर्पित की गई, इससे क्षेत्र के लोगों को आपातकालीन स्वास्थ्य सेवाओं में बड़ी राहत मिलेगी। इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष आशा खेदड़, पूर्व मंत्री अनूप धानक, पूर्व चेयरमैन रणधीर धीरू, पार्टी कोषाध्यक्ष अशोक मित्तल ,विकास सरपंच ,साहिल वधवा सहित गणमान्य व्यक्ति, सामाजिक कार्यकर्ता एवं बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे।

धुआँ प्रमाण पत्र (PUC) न होने पर अब टू-व्हीलर और फोर-व्हीलर पर ₹10,000 तक का जुर्माना लगाया जा रहा है विनोद दीक्षित

परिवहन विशेष न्यूज

बृज यातायात एवं पर्यावरण जनजागरूकता समिति (रजि.), उत्तर प्रदेश के संस्थापक अध्यक्ष विनोद दीक्षित ने जानकारी देते हुए बताया कि—

◈ सरकार द्वारा अब ओटीपी आधारित नई प्रणाली लागू की गई है।

◈ जब भी वाहन का धुआँ (PUC) चेक होगा, तो रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर पर OTP आएगा।

◈ OTP देने के बाद ही धुआँ प्रमाण पत्र जारी किया जाएगा।

⚠ महत्वपूर्ण सूचनाः

जिन वाहनों का मोबाइल नंबर परिवहन विभाग में रजिस्टर्ड नहीं है, उनका PUC नहीं बनेगा।

बिना PUC के ₹10,000 का जुर्माना लगाया जा रहा है।

यह जुर्माना खड़े वाहनों पर भी लगाया जा सकता है।

पहले लोग बाहर जाते समय ही PUC बनवाते थे, लेकिन अब स्थानीय स्तर पर भी यह अनिवार्य कर दिया गया है।

☞ इसलिए सभी वाहन स्वामी समय रहतेः

✔ अपना मोबाइल नंबर परिवहन विभाग में अपडेट कराएं

✔ नियमित रूप से धुआँ प्रमाण पत्र बनवाएं

बच्चियों को वितरित की गई उपयोगी सामग्री

गोरखपुर। रोटरी क्लब गोरखपुर द्वारा रविवार को नवीन मानसिक मंदित महिला आश्रय गृह सह प्रशिक्षण केंद्र, नॉर्मल स्कूल परिसर, गोरखपुर में 21 कन्याओँ के लिए सामग्री वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत आश्रय गृह में निवासरत मानसिक मंदित बालिकाओं को उनके दैनिक जीवन की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए वस्त्र, स्वच्छता सामग्री, उपयोगी सामान एवं अन्य आवश्यक वस्तुएं ससम्मान वितरित की गईं। सामग्री वितरण के दौरान बच्चियों के चेहरे पर जो संतोष, आत्मीयता और मुस्कान झलकी, वह इस सेवा कार्य की सबसे बड़ी सफलता बनकर उभरी। यह दृश्य न केवल भावुक करने वाला था, बल्कि समाज के प्रति हमारी जिम्मेदारियों का भी स्मरण कराता रहा।

इस सेवा कार्य का नेतृत्व रोटरी क्लब गोरखपुर के अध्यक्ष रोट. सतीश राय ने किया। उनके मार्गदर्शन में क्लब के सदस्यों ने मिलकर इस कार्यक्रम को सुव्यवस्थित ढंग से संपन्न कराया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में वरिष्ठ रोटेरियन रोट. दिनेश चंद्र अग्रवाल का विशेष सहयोग रहा, जिनके योगदान के प्रति क्लब ने आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर क्लब के पदाधिकारी एवं सदस्यगण कार्यक्रम निदेशक दिनेश चंद्र अग्रवाल, रोट. प्रवीर आर्या,कोषाध्यक्ष रोट. संजीव अग्रवाल, सामुदायिक सेवा निदेशक रोट. आलोक अग्रवाल एवं सचिव रोट. संचित श्रीवास्तव सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहें।

मुख्यमंत्री विद्यालय सौंदर्यीकरण पुरस्कार में पीएम श्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बालक(हिसार) प्रथम स्थान पर रहा

परिवहन विशेष न्यूज

हिसार/हरियाणा (नरेश गुणपाल) शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करते हुए पीएम श्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बालक ब्लॉक बरवाला जिला हिसार ने जिला स्तर पर आयोजित मुख्यमंत्री विद्यालय सौंदर्यीकरण पुरस्कार में प्रथम स्थान प्राप्त कर पूरे क्षेत्र का नाम रोशन किया है। इस उपलब्धि के लिए विद्यालय को एक लाख रुपए की नकद राशि एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया है।

विद्यालय के प्राचार्य रमेश यादव ने बताया कि यह पुरस्कार शिक्षा विभाग द्वारा विद्यालयों में स्वच्छता, सौंदर्यीकरण, नवाचार एवं समग्र विकास को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रदान किया जाता है। इस वर्ष जिले के सभी 9 ब्लॉकों में से ब्लॉक स्तर पर विजेता रहे विद्यालयों के बीच कड़ी प्रतिस्पर्धा हुई, जिनमें पीएम श्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बालक ब्लॉक बरवाला जिला हिसार ने अपनी उत्कृष्ट व्यवस्थाओं और नवाचारों के बल पर प्रथम स्थान हासिल किया। कमेटी सदस्यों ने भवन एवं फर्नीचर रखरखाव, कार्यालय प्रयोगशाला, कम्प्यूटर लैब व पुस्तकालय व्यवस्था, रसोई घर पानी व सफाई व्यवस्था, मुख्य द्वार व चार दिवारी, खेल मैदान व खेल सामग्री का रखरखाव, पीने के पानी की स्वच्छता और उपलब्धता, जल निकासी, जल संरक्षण व्यवस्था, प्रांगण के बगीचे व पौधों की स्थित, विद्यार्थी अनुशासन व यूनिफॉर्म, मिड डे मिल पकाने व वितरण की व्यवस्था, विद्यालय के लेख व पुस्तकालयों की व्यवस्था, प्रार्थना सभा की नियमितताएं, बिजली उपकरण व अग्निशमन यंत्र का रखरखाव, विद्यालय भवन में राज्य व राष्ट्र के मानचित्र व राष्ट्रगान आदि अनमोल वचन का लेखन, शौचालय व सीवरेज व्यवस्था, कचरा निपटान आदि पहलुओं पर जांच की गई।

पुरस्कार के लिए चयन प्रक्रिया अतिरिक्त उपायुक्त विकास यादव की अध्यक्षता में गठित जिला स्तरीय समिति द्वारा की गई। समिति ने विद्यालयों का गहन निरीक्षण करते हुए स्वच्छ परिसर, हरियाली, छात्र-हितैषी वातावरण, दीवार लेखन, स्मार्ट कक्षाओं, तथा अन्य रचनात्मक गतिविधियों के आधार पर मूल्यांकन किया। इन सभी मानकों पर विद्यालय ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए यह सम्मान प्राप्त किया।

ग्राम पंचायत के सदस्यों, विद्यालय के प्राचार्य, स्टाफ एवं विद्यार्थियों ने इस उपलब्धि को टीमवर्क और निरंतर प्रयासों का परिणाम बताया। विद्यालय परिसर में साफ-सफाई, पौधारोपण, आकर्षक दीवार चित्रण एवं आधुनिक शिक्षण सुविधाओं को विकसित करने के लिए सभी ने मिलकर कार्य किया, जिससे विद्यालय एक आदर्श शिक्षण संस्थान के रूप में उभरकर सामने आया है।

इस उपलब्धि पर क्षेत्र के गणमान्य व्यक्तियों, बुद्धिजीवियों, अभिभावकों एवं शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने विद्यालय परिवार को बधाई दी है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह विद्यालय भविष्य में भी इसी प्रकार उत्कृष्ट कार्य करता रहेगा और अन्य विद्यालयों के लिए प्रेरणा स्रोत बनेगा। विद्यालय प्रबंधन ने इस सम्मान के लिए शिक्षा विभाग एवं जिला प्रशासन का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि भविष्य में भी विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए निरंतर प्रयास किए जाएंगे।

पीएम श्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बालक ब्लॉक बरवाला जिला हिसार का सौंदर्यकरण में प्रथम स्थान पर आने पर विद्यालय के प्रधानाचार्य एवं सभी स्टाफ सदस्यों का तहदिल से आभार व्यक्त किया जाता हैं, शिक्षा के साथ-साथ सौंदर्यकरण का भी मुख्य उद्धेश्य होना चाहिए, ताकि विद्यार्थियों को साफ-सुथरा एवं स्वच्छ वातावरण मिल सके, जिससे विद्यार्थियों का मानसिक और शारीरिक विकास प्रबल हो सके।

अनुज शर्मा समाजसेवी बालक

खेल से होता है बच्चो का शारिरिक व मानसिक विकास

गोरखपुर। जेबी महाजन डिग्री कॉलेज चौरी चौरा के राष्ट्रीय सेवा योजना के शिवाजी इकाई द्वारा आयोजित सप्त दिवसीय शिविर के चौथे दिन रविवार को स्वयंसेवकों ने जेबी महाजन डिग्री कॉलेज और इसके आसपास साफ सफाई का कार्य किया। स्वयं सेवको ने अभियान चलाकर पर्यावरण विषय पर लोगों को जागरूक किया और गीले व सूखे कचड़े को अलग अलग डालने की अपील की। राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वयं सेवको ने शिविर के चौथे दिन बौद्धिक सत्र में खेल प्रशिक्षक उमेश यादव ने खेल के महत्व पर प्रकाश डाला और स्वयं सेवको को खो-खो व कबड्डी का खेल का प्रशिक्षण दिया। इस दौरान महाविद्यालय के प्रबंधक ईश्वरचंद्र जायसवाल ने स्वयं सेवको का उत्साहवर्धन किया। राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी नरेंद्र कुशवाहा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया1

चैती छठ महापर्व की शुरुआत, नहाय-खाय के साथ श्रद्धालुओं की उमड़ी भीड़

शौण्डिक समाज धर्मशाला में सामूहिक रूप से छठ महापर्व की शुरुआत

गयाजी। लोक आस्था का महापर्व चैती छठ रविवार को नहाय-खाय के साथ विधिवत शुरू हो गया। चार दिवसीय इस पर्व में भगवान सूर्यदेव और छठी मैया की आराधना कर परिवार की सुख-समृद्धि और आरोग्य की कामना की जाती है। शहर के वार्ड संख्या 51 स्थित शौण्डिक समाज धर्मशाला में सामूहिक रूप से छठ महापर्व की शुरुआत की गई, जहां हजारों श्रद्धालु शामिल हुए।

इस अवसर पर पूर्व वार्ड पार्षद किरण देवी एवं किरण गुप्ता के नेतृत्व में समाज के लोगों ने मिलकर आयोजन किया। गया स्थानीय वार्ड पार्षद सह सशक्त स्थायी समिति सदस्य मनोज कुमार ने बताया कि हर वर्ष की भांति इस बार भी पूरे समाज के सहयोग से छठ पूजा का आयोजन किया जा रहा है। नहाय-खाय के दिन भंडारे में बड़ी संख्या में लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, छठ पर्व भगवान सूर्य और उनकी शक्ति छठी मैया को समर्पित है। मान्यता है कि इस व्रत के पालन से आरोग्य की प्राप्ति होती है तथा संतान के जीवन के कष्ट दूर होते हैं। सूर्य देव को प्रत्यक्ष देवता माना गया है, जिनकी ऊर्जा से समस्त सृष्टि संचालित होती है। इस व्रत से घर में सुख-शांति और समृद्धि का वास होता है।

विश्व क्षय रोग दिवस- जागरूकता ही बचाव का सबसे बड़ा उपाय

डाङ्क रूप कुमार बनर्जी

वरिष्ठ होम्योपैथिक चिकित्सक

हर वर्ष 24 मार्च को पूरा विश्व Tuberculosis (टीबी) के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए एकजुट होता है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि टीबी आज भी एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है, लेकिन सही जानकारी, सावधानी और उपचार से इसे पूरी तरह हराया जा सकता है।

टीबी एक संक्रामक रोग है, जो मुख्यतः फेफड़ों को प्रभावित करता है। यह रोग Mycobacterium tuberculosis नामक जीवाणु से होता है और संक्रमित व्यक्ति के खांसने-छींकने से फैलता है।

इसके पहचान के संकेत निम्नलिखित हैं:- लगातार 2 सप्ताह से अधिक खांसी ,बलगम में खून ,शाम को बुखार, रात में पसीना, बहुत ज्यादा थकान महसूस होना ,वजन घटना व भूख कम होना आदि। ऐसे लक्षण दिखने पर तुरंत जांच कराना आवश्यक है।

बचाव के लिए खुद को क्या करना चाहिए :- खांसते-छींकते समय मुंह ढकें , भीड़भाड़ व बंद स्थानों से बचें , घर में साफ हवा और धूप का प्रवेश रखें ,टीबी मरीज से उचित दूरी व सावधानी रखें ,फेस मास्क का प्रयोग करें,बार-बार साबुन पानी से हाथ को धोते रहे

संतुलित आहार – मजबूत रक्षा कवच :- दाल, दूध, अंडा, पनीर (प्रोटीन), टोफू , बिल्कुल हल्का मसाले का चिकन अथवा मछली यदि मांसाहारी है तो , हरी सब्जियां और मौसमी फल ,सूखे मेवे – बादाम, अखरोट ,हल्दी वाला दूध । तम्बाकू, शराब, जंक फूड, फास्ट फूड आदि से दूरी बनाए रखना ही उचित है।

कैसे बढ़ाएं प्रतिरोधक क्षमता :- नियमित योग व प्राणायाम , 7–8 घंटे की पर्याप्त नींद ,तनाव से दूरी ,सप्ताह में काम से कम 5 दिन हल्की एक्सरसाइज , थोड़ी देर के लिए सूर्य की रोशनी (Vitamin D)। यदि टीबी का समय पर इलाज न हो, तो यह कई अन्य रोगों को जन्म दे सकती हैः Pneumonia ,Bronchitis ,Malnutrition,Diabetes Mellitus, HIV/AIDS आदि। इसलिए टीबी को नजरअंदाज करना खतरनाक हो सकता है।

टीबी की चिकित्सा में होम्योपैथी की महत्वपूर्ण भूमिका :- आज के समय में टीबी केवल एक संक्रमण नहीं, बल्कि कमजोर होती प्रतिरोधक क्षमता का संकेत भी है।यदि हम रोगी के सम्पूर्ण स्वास्थ्य (Body + Mind) को देखें, तो यहां होम्योपैथी एक विशेष और प्रभावी चिकित्सा के रूप में उभरती है।होम्योपैथी केवल बीमारी नहीं, बल्कि व्यक्ति का इलाज करती है।इसका मुख्य उद्देश्य है,शरीर की आंतरिक रोग-प्रतिरोधक शक्ति को जागृत करना,रोग के मूल कारण को संतुलित करना,दवाओं के दुष्प्रभाव को कम करना और रोगी के मानसिक और शारीरिक संतुलन को सुधारना। यही कारण है कि टीबी जैसे दीर्घकालिक रोगों में होम्योपैथी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

जीवनशैली में सुधार :-

स्वस्थ जीवनशैली ही टीबी से बचाव का मूल मंत्र है :- स्वच्छता , संतुलित आहार ,नियमित दिनचर्या , सकारात्मक सोच। टीबी एक गंभीर लेकिन पूरी तरह से उपचार योग्य रोग है।

जरूरत है जागरूकता, सही समय पर जांच और पूर्ण उपचार की। इसलिए "डर नहीं, जागरूकता अपनाएं टीबी को हराएं।"

किताबों की ओर लौटते देश

विजय गर्ग

आज के डिजिटल युग में, जहाँ हमारी आँखें अधिकतर समय स्मार्टफोन, लैपटॉप और टैबलेट की स्क्रीन पर टिकी रहती हैं, एक दिलचस्प चलन देखने को मिल रहा है— किताबों की ओर वापसी। सोशल मीडिया की भागदौड़ और सूचनाओं के सैलाब के बीच, लोग फिर से छपे हुए पन्नों की महक और किताबों के सुकून को अपना रहे हैं।

क्यों लौट रहे हैं लोग किताबों की ओर?

डिजिटल थकान ने लोगों को यह एहसास दिलाया है कि स्क्रीन से हटकर कुछ समय शांति से बिताना कितना जरूरी है। इसके पीछे कई ठोस कारण हैं:

गहन एकाग्रताः इंटरनेट पर हम अक्सर 'स्क्रॉलिंग' करते हैं, जिससे ध्यान भटकता है। किताब पढ़ना हमें एक ही विषय पर गहराई से सोचने और एकाग्र होने में मदद करता है।

मानसिक शांतिः किताबों की दुनिया हमें वास्तविक जीवन के तनाव से दूर एक अलग संसार में ले जाती है। यह ध्यान का ही एक रूप है, जो मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है।

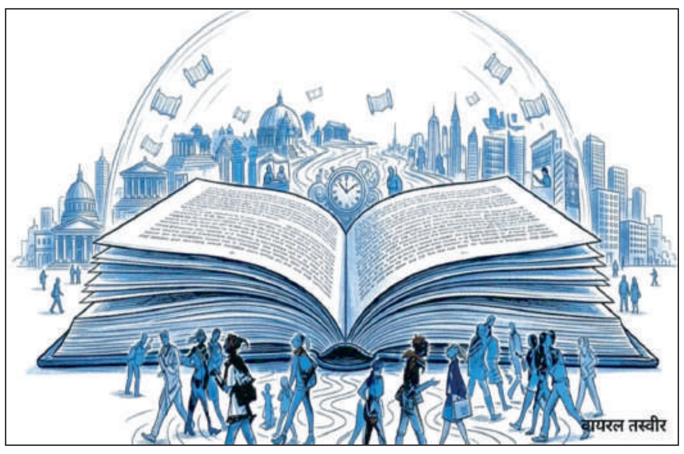

वायरल तस्वीर

तथ्यात्मक स्पष्टताः इंटरनेट पर जानकारी का भंडार है, लेकिन अक्सर वह भ्रामक हो सकती है। किताबें, विशेषकर गैर-काल्पनिक पुस्तकें, किसी विषय पर अधिक प्रामाणिक और व्यवस्थित ज्ञान प्रदान करती हैं।

डिजिटल डिटॉक्सः लगातार नीली रोशनी के संपर्क में रहने के बाद, रात को सोने से पहले किताब पढ़ना आँखों को आराम देता है और नींद की गुणवत्ता में सुधार करता है।

नई पीढ़ी और किताबों का बढ़ता प्रेम

यह कहना गलत होगा कि आज की पीढ़ी केवल तकनीक की दीवानी है। वास्तव में, (टिकटॉक पर किताबों का समुदाय) और बुकस्टाग्राम जैसे प्लेटफॉर्मों ने युवाओं में पढ़ने की रुचि को फिर से जिंदा किया है। किताबें अब केवल ज्ञान का जरिया नहीं, बल्कि एक 'लाइफस्टाइल स्टेटमेंट' भी बन गई हैं।

पिछले कुछ वर्षों में यह धारणा बन गई थी कि तकनीक के विस्तार के साथ किताबों का महत्व कम हो जाएगा। लोग स्क्रीन पर पढ़ना पसंद करेंगे और पुस्तकालयों की जगह डिजिटल प्लेटफॉर्म ले लेंगे। लेकिन अब स्थिति बदलती दिखाई दे रही है। युवा वर्ग, जो पहले अधिकतर समय मोबाइल पर बिताता था, अब किताबों के प्रति आकर्षित हो रहा है। पुस्तक मेलों में बढ़ती भीड़, ऑनलाइन और ऑफलाइन बुक स्टोर्स की बढ़ती बिक्री और पुस्तकालयों में फिर से लौटती रौनक इस बात का प्रमाण हैं।

किताबें केवल ज्ञान का स्रोत नहीं होतीं, बल्कि वे हमारे विचारों को गहराई देती हैं, कल्पनाशक्ति को विकसित करती हैं और जीवन के प्रति संवेदनशील बनाती हैं। एक अच्छी किताब पाठक को सोचने पर मजबूर करती है, उसे नए दृष्टिकोण देती है और मानसिक शांति भी प्रदान करती है। डिजिटल माध्यमों में जहाँ त्वरित जानकारी मिलती है, वहीं किताबें गहन समझ विकसित करने का अवसर देती हैं।

इस परिवर्तन के पीछे कई कारण हैं। सबसे बड़ा कारण है डिजिटल थकान। लगातार स्क्रीन पर समय बिताने से लोगों को मानसिक और शारीरिक थकान महसूस होने लगी है। ऐसे में किताबें एक शांत और सुकून भरा विकल्प बनकर उभर रही हैं। इसके अलावा, शिक्षा के क्षेत्र में भी किताबों के महत्व को फिर से समझा जा रहा है। शिक्षक और अभिभावक बच्चों को किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित कर रहे हैं ताकि उनका सर्वांगीण विकास हो सके।

सरकार और सामाजिक संस्थाएँ भी इस दिशा में प्रयास कर रही हैं। विभिन्न शहरों में पुस्तक मेले आयोजित किए जा रहे हैं, पुस्तकालयों का आधुनिकीकरण किया जा रहा है और पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए अभियान चलाए जा रहे हैं। यह पहल न केवल पढ़ने की आदत को बढ़ावा देती है, बल्कि समाज में बौद्धिक विकास की नींव भी मजबूत करती है।

हालाँकि, यह भी आवश्यक है कि किताबों के प्रति यह बढ़ती रुचि केवल एक अस्थायी प्रवृत्ति न बनकर स्थायी आदत में बदल जाए। इसके लिए परिवार, विद्यालय और समाज सभी को मिलकर प्रयास करने होंगे। बच्चों को बचपन से ही किताबों के साथ जोड़ना होगा और पढ़ने को एक आनंददायक अनुभव बनाना होगा।

अंततः, किताबों की ओर लौटता देश एक सकारात्मक संकेत है। यह न केवल ज्ञान के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है, बल्कि यह भी बताता है कि आधुनिकता के बीच हम अपनी जड़ों और मूल्यों को नहीं भूल रहे। किताबें हमेशा से हमारी सच्ची मित्र रही हैं और यह वापसी इस बात का प्रमाण है कि उनका महत्व कभी कम नहीं हो सकता।

युद्ध और तितली (लघु कविता)

राजेन्द्र गायकवाड
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

धुएं में घिरा है आसमान,
लड़ाकू विमानों की चीखें,
और बारूद से हलाकान जीव
जहाँ कभी हँसती थीं सुबह की किरणें और
गाती थी हर शाम,
वहाँ अब सिर्फ़ धुआँ और टूटे हुए
हैं,आलीशान मकान
फिर भी एक तितली के
लाल-नारंगी पंखों मे
शांति का रंग बचा हुआ है।
मानो युद्ध जैसा कुछ न हो।
पंख धीरे-धीरे हिलाती है,
जमीं पर बिखरे खून के ऊपर,
एक नन्हा सा इशारा छोड़ गई,
कि जीवन अभी उड़ सकता है,
भले ही सारी हवा में
तैरती मौत की गंध हो।
तितली ने न कोई नारा लगाया,
न कोई बम गिराया,
बस उड़ती है,थोड़ा सा रंग, थोड़ी सी
हलचल,
थोड़ा सा लेकर संदेश
कि युद्ध के बाद भी
सुबह फिर हो सकती है।
बशर्ते लम्पट आदमी ,
अपनी आदमियत न छोड़े।

स्कूल से परे: दीवारों के बिना सीखना

डॉ विजय गर्ग

शिक्षा लंबे समय से कक्षाओं, पाठ्यपुस्तकों और परीक्षाओं से जुड़ी हुई है। युवा दिमाग को आकार देने में स्कूल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, लेकिन आज की तेजी से बदलती दुनिया में शिक्षा चार दीवारों के भीतर सीमित नहीं रह सकती। स्कूल से परे का विचार इस बात पर जोर देता है कि सच्ची शिक्षा वास्तविक जीवन के अनुभवों, व्यावहारिक कौशल और निरंतर आत्म-विकास तक फैली हुई है।

आधुनिक युग में, ज्ञान अब केवल स्कूल में पढ़ाई जाने वाली चीजों तक सीमित नहीं है। डिजिटल प्रौद्योगिकी, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और इंटरैक्टिव मीडिया के उदय ने सीखने के लिए नए रास्ते खोल दिए हैं। छात्र वीडियो, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, पॉडकास्ट और आभासी प्रयोगशालाओं के माध्यम से अपनी रुचि के विषयों का अन्वेषण कर सकते हैं। यूट्यूब और खान अकादमी जैसे प्लेटफॉर्म किसी भी समय, कहीं भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच प्रदान करते हैं। इस बदलाव से सीखना अधिक लचीला, व्यक्तिगत और आकर्षक हो गया है।

स्कूल से परे, जीवन स्वयं एक कक्षा बन जाता है। रोजमर्रा के अनुभव मूल्यवान सबक सिखाते हैं जिन्हें कोई भी पाठ्यपुस्तक पूरी तरह से नहीं समझ सकती। नए स्थानों पर यात्रा करने से सांस्कृतिक समझ बढ़ती है, लोगों के साथ बातचीत से संचार कौशल बढ़ता है, तथा सामुदायिक सेवा में भाग लेने से सहानुभूति और जिम्मेदारी बढ़ती है। ये अनुभव चरित्र को आकार देते हैं और व्यक्तियों को वास्तविक दुनिया की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करते हैं।

कौशल विकास स्कूल से परे सीखने का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। जबकि स्कूल शैक्षणिक ज्ञान पर ध्यान केंद्रित करते हैं, समस्या समाधान, टीमवर्क, नेतृत्व और रचनात्मकता जैसे व्यावहारिक कौशल भी समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। खेल, कला, इंटर्नशिप और शौक जैसी गतिविधियां छात्रों को उनकी प्रतिभा का पता लगाने और आत्मविश्वास बढ़ाने में मदद करती हैं। उदाहरण के लिए, टीम स्पोर्ट्स खेलना अनुशासन और सहयोग सिखाता है, जबकि पेंटिंग या लेखन जैसे रचनात्मक कार्य आत्म-अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करते हैं।

इसके अतिरिक्त, स्कूल से परे सीखना जिज्ञासा और आजीवन सीखने को प्रोत्साहित करता है। जब छात्र अपनी रुचियों का पता लगाने के लिए स्वतंत्र होते हैं, तो उनमें सीखने के प्रति स्वाभाविक प्रेम विकसित होता है। यह मानसिकता उस दुनिया में आवश्यक है जहां ज्ञान लगातार विकसित हो रहा है। करियर बदल रहे हैं, नई प्रौद्योगिकियां उभर रही हैं, और प्रासंगिक बने रहने के लिए व्यक्तियों को लगातार अपने कौशल को अद्यतन करना होगा।

शिक्षा के इस व्यापक दृष्टिकोण का समर्थन करने में माता-पिता और शिक्षक भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। केवल अंकों और परीक्षाओं पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, उन्हें अन्वेषण, आलोचनात्मक सोच और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करना चाहिए। अनुभवात्मक शिक्षा के अवसर प्रदान करना, जैसे कि परियोजनाएं, क्षेत्र भ्रमण और वास्तविक जीवन की समस्याओं का समाधान, शिक्षा को अधिक सार्थक और प्रभावशाली बना सकता है।

हालाँकि, संतुलन बनाए रखना महत्वपूर्ण है। स्कूल संरचना, अनुशासन और बुनियादी ज्ञान प्रदान करते हैं, जो आवश्यक हैं। स्कूल से परे सीखने को औपचारिक शिक्षा का पूरक होना चाहिए, न कि उसका स्थान। वे मिलकर एक समग्र शिक्षण अनुभव बनाते हैं जो बुद्धि और चरित्र दोनों का पोषण करता है।

निष्कर्षतः, स्कूल से परे शिक्षा का उद्देश्य सीमाओं को तोड़ना और दुनिया को सीखने के स्थान के रूप में अपनाना है। यह व्यक्तियों को न केवल परीक्षाओं के लिए, बल्कि जीवन के लिए भी तैयार करता है। कक्षा के ज्ञान को वास्तविक अनुभवों के साथ संयोजित करके, हम शिक्षार्थियों की एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण कर सकते हैं जो जिज्ञासु, सक्षम और भविष्य को आकार देने के लिए तैयार हों।

स्कूल की पारंपरिक छवि, चार दीवारें, डेस्क की पंक्तियां और एक ब्लैकबोर्ड, गहन परिवर्तन से गुजर रही है। ₹दीवारों के बिना सीखना₹ की अवधारणा स्थिर, अंतर्निहित शिक्षा से एक तरल,

अनुभवात्मक प्रक्रिया की ओर बदलाव का प्रतिनिधित्व करती है जो पूरे विश्व को एक कक्षा के रूप में देखती है। दीवारों के बिना सीखना क्या है? अपने मूल में, यह शैक्षिक दर्शन पारंपरिक संस्थाओं की भौतिक और रूपकात्मक सीमाओं को तोड़ता है। इससे पता चलता है कि ज्ञान किसी एक इमारत या घंटों के विशिष्ट सेट तक सीमित नहीं है। इसके बजाय, सीखना रोजमर्रा की जिंदगी का विस्तार बन जाता है, जो निम्नलिखित को एकीकृत करता है प्रकृतिः अवलोकन, जिज्ञासा और पर्यावरणीय प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए पर्यावरण का प्राथमिक शिक्षक के रूप में उपयोग करना। समुदायः प्रामाणिक, वास्तविक दुनिया के संदर्भों में शैक्षणिक अवधारणाओं को लागू करने के लिए संग्रहालयों, पुस्तकालयों, स्थानीय व्यवसायों और सरकारी कार्यालयों के साथ जुड़ना। प्रौद्योगिकीः वैश्विक जानकारी तक पहुंचने, दूरस्थ रूप से सहयोग करने और आभासी सिमुलेशन में शामिल होने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म का लाभ उठाना जो भौतिक भूगोल से परे है। सीमाओं को तोड़ने के लाभ पारंपरिक कक्षा की बाधाओं को दूर करने से छात्र विकास के लिए महत्वपूर्ण लाभ मिलते हैं, जो कि केवल शैक्षणिक प्रतिधारण से आगे बढ़ जाता है उन्नत संज्ञानात्मक जुड़ावः अनुभवात्मक शिक्षा छात्रों को पाठ्यपुस्तकों में सैद्धांतिक समस्याओं के बजाय अप्रत्याशित, वास्तविक दुनिया के परिदृश्यों से निपटने के लिए मजबूर करके आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान को बढ़ावा देती है। समग्र विकासः प्रकृति में बिताया गया समय और सक्रिय सामुदायिक भागीदारी, तनाव को कम करने, मानसिक कल्याण में सुधार करने तथा सहानुभूति, टीमवर्क और नेतृत्व जैसे सामाजिक कौशल को बढ़ाने से जुड़ी है।

व्यावहारिक कौशल प्राप्तिः अपने समुदायों में काम करके, छात्र ₹सॉफ्ट स्कीर₹ प्राप्त करते हैं समग्र विकासः प्रकृति में बिताया गया समय और सक्रिय सामुदायिक भागीदारी, तनाव को कम करने, मानसिक कल्याण में सुधार करने तथा सहानुभूति, टीमवर्क और नेतृत्व जैसे सामाजिक कौशल को बढ़ाने से जुड़ी है। व्यावहारिक कौशल अधिग्रहणः अपने समुदायों में काम करके, छात्र ₹नरम कौशल₹ प्राप्त करते हैं, जिसे अक्सर 21वीं सदी के कौशल कहा जाता है। जैसे अनुकूलनशीलता, संचार और आत्म-प्रबंधन, जो आधुनिक कार्यबल के लिए आवश्यक हैं। सिद्धांत और व्यवहार को जोड़नाः जब छात्र इस क्षेत्र में ज्ञान का उपयोग करते हैं, तो वे शैक्षणिक सिद्धांत और वास्तविक दुनिया की उपयोगिता के बीच के अंतर को पाटते हैं, जिससे सीखना अधिक प्रासंगिक और उद्देश्यपूर्ण लगता है। शिक्षा का भविष्य बिना दीवारों के सीखने की ओर बढ़ना केवल एक अस्थायी प्रवृत्ति नहीं है, बल्कि शिक्षा के भविष्य का एक खाका है। जैसे-जैसे हम ऐसी दुनिया की ओर बढ़ रहे हैं जो पारंपरिक डिग्री-केवल मॉडलों के बजाय कौशल-आधारित शिक्षा को महत्व देती है, भौतिक स्कूल भवन स्वयं अधिक लचीला, मॉड्यूलर और आसपास के शहरी या ग्रामीण प्रणालियों में एकीकृत होता जा रहा है। यह बदलाव प्रोत्साहित करता हैः आजीवन अनुकूलनशीलताः व्यक्तियों को आत्म-निर्देशित शिक्षार्थी बनने के लिए तैयार करना, जो लगातार बदलते पेशेवर परिदृश्य में आगे बढ़ सकें। लोकतांत्रिक पहुंचः शहर (या विश्व) को एक विस्तारित परिसर के रूप में उपयोग करके सांस्कृतिक और व्यावसायिक संसाधनों तक पहुंच का लोकतंत्रीकरण। समावेशिताः विविध शिक्षण पथ बनाना जो विभिन्न गति, स्थानों और शिक्षा की शैलियों को पूरा करता हो। अंततः, अपने दरवाजे खोलकर और कभी-कभी उन्हें पूरी तरह से हटाकर हम शिक्षा को उतना ही असीमित, गतिशील और अनुकूलनीय बनाने का अवसर देते हैं, जितना कि वह छात्रों को उस दुनिया के लिए तैयार करना चाहती है। क्या आप चाहेंगे कि मैं किसी प्रस्तुति या लेख के लिए एक रूपरेखा तैयार करूं, जिसमें विशेष रूप से यह बताया जाए कि किस प्रकार शैक्षिक संस्थान सामुदायिक-आधारित शिक्षा को अपने मौजूदा पाठ्यक्रमों में एकीकृत कर सकते हैं?

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाशास्त्री स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

IIT दिल्ली और हंसराज कॉलेज ने विश्व जल दिवस के अवसर पर यमुना के सुर घाट पर विशाल स्वच्छता अभियान का नेतृत्व किया

मोनिका कौल

नई दिल्ली, 22 मार्च, 2026 – विश्व जल दिवस के उपलक्ष्य में, क्षेत्रीय समन्वय संस्थान (RCI) IIT दिल्ली ने, उन्नत भारत अभियान (UBA) हंसराज कॉलेज के सहयोग से, यमुना घाट स्थित सुर घाट पर एक व्यापक स्वच्छता-सह-वैज्ञानिक निगरानी अभियान का आयोजन किया।

दिल्ली की मुख्य जीवनरेखा (यमुना नदी) में प्रदूषण के गंभीर स्तरों को संबोधित करने के उद्देश्य से शुरू की गई इस पहल में 100 से अधिक छात्र स्वयंसेवकों और स्थानीय समुदाय के सदस्यों ने भाग लिया।

इस अभियान के लिए सुर घाट का चयन रणनीतिक रूप से किया गया, क्योंकि ₹प्रदूषण के हॉटस्पॉट₹ के रूप में यह स्थल अत्यधिक संवेदनशील है।

यह स्थल वर्तमान में दोहरी चुनौती का सामना कर रहा हैः स्थानीय शहरी नालियों से भारी मात्रा में होने वाला जल-निकास और धार्मिक अनुष्ठानों से उत्पन्न कचरे का जमाव।

वहां पहुंचने पर, स्वयंसेवकों ने प्लास्टिक की बोतलों, पॉलीथीन की थैलियों, फेंके हुए कपड़ों और मंदिरों से निकले फूलों के कचरे के विशाल ढेर देखे, जो नदी की गाद में बुरी तरह उलझे हुए थे।

डॉ. विजय कुमार (IIT दिल्ली) ने संस्थान के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ मिलकर इस अभियान का नेतृत्व किया और ₹आत्म-निर्भर यमुना₹ के अपने दृष्टिकोण को साझा किया।

स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए डॉ. कुमार ने कहा, ₹स्वच्छता केवल एक दिन का कार्य नहीं है, बल्कि यह एक निरंतर चलने वाली वैज्ञानिक और सामाजिक प्रतिबद्धता है। हमारा उद्देश्य नदी के दीर्घकालिक स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने के लिए, कम लागत वाली जल-छनन (filtration) तकनीकों को समुदाय-आधारित निगरानी प्रणाली के साथ एकीकृत करना है।

"इस कार्यक्रम का आयोजन प्रो. मोनिका कौल (समन्वयक, UBA हंसराज कॉलेज) के नेतृत्व में किया गया, जिसमें 'हरितिमा' (पर्यावरण सोसायटी) और NSS हंसराज कॉलेज ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

अभियान की मुख्य विशेषताएंः

कचरे का विशाल निष्कासनः दस्ताने और मास्क वितरित करके सख्त सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन करते हुए, स्वयंसेवकों ने सफलतापूर्वक 50 बड़े थैलों में अजैव-निम्नीकरणीय (non-biodegradable) कचरा एकत्र

किया और उसे वहां से हटाया।

वैज्ञानिक निगरानीः केवल हाथ से सफाई करने से आगे बढ़ते हुए, टीम ने जल की गुणवत्ता का वास्तविक समय (real-time) में आकलन किया। नदी के रासायनिक और जैविक स्वास्थ्य का विश्लेषण करने के लिए, घाट के विभिन्न बिंदुओं और अलग-अलग गहराइयों से जल के नमूने एकत्र किए गए।

सामुदायिक लामबंदीः UBA के दर्शन के अनुरूप, स्वयंसेवकों ने स्थानीय बस्ती के निवासियों के लिए एक जागरूकता अभियान चलाया, जिसमें भूजल स्तर पर प्लास्टिक कचरे के पड़ने वाले हानिकारक प्रभावों को उजागर किया गया।

यमुना के लिए संकल्पः इस कार्यक्रम का समापन पारंपरिक यमुना आरती और 'यमुना बचाओ' के सामूहिक संकल्प के साथ हुआ, जिसमें नदी को और अधिक प्रदूषण से बचाने का प्रण लिया गया।

प्रो. मोनिका कौल ने इस बात पर ज़ोर दिया कि IIT दिल्ली और दिल्ली विश्वविद्यालय के कॉलेजों जैसे प्रमुख संस्थानों के बीच इस तरह का सहयोग, अकादमिक शोध और ज़मीनी स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के बीच की खाई को पाटने के लिए बेहद ज़रूरी है।

आज की रीयल-टाइम मॉनिटरिंग से जुटाए गए डेटा का विश्लेषण IIT दिल्ली और हंसराज कॉलेज द्वारा किया जाएगा, ताकि यमुना नदी के किनारे के लिए दीर्घकालिक और विकेंद्रीकृत कचरा प्रबंधन समाधान प्रस्तावित किए जा सकें।

उन्नत भारत अभियान' (UBA) के बारे में:' उन्नत भारत अभियान' शिक्षा मंत्रालय का एक प्रमुख कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य उच्च शिक्षण संस्थानों को स्थानीय समुदायों से जोड़ना है, ताकि अभिनव सामाजिक और तकनीकी उपायों के माध्यम से विकास संबंधी चुनौतियों का समाधान किया जा सके।

प्रोफेसर मोनिका कौल ने कहा कि यमुना एक महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र है और इसका स्वस्थ रहना अत्यंत आवश्यक है।

पुण्यतिथि 23 मार्च पर विशेष: बहरों को आवाज़ सुनाती, इंकलाब की एक अनुगूंज - शहीद ए आजम भगत सिंह

घनश्याम बादल

बहरों को सुनाने के लिए धमाके ज़रूरी हो जाते हैं, क्रांति तलवार की धार से नहीं बल्कि धारदार विचारों से आती है और इंकलाब ज़िंदाबाद तथा सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है जैसी जोशीली उक्तियां जब कानों में पड़ती हैं तब याद आते हैं शहीद ए आज़म कहे जाने वाले सरदार भगत सिंह।

लेकिन भगत सिंह को याद करना इस देश में अक्सर एक सुरक्षित कर्मकांड में बदल दिया गया है। फोटो पर माल्यार्पण, दो-चार नारे, और फिर वही यथास्थिति। जबकि सच यह है कि भगत सिंह की स्मृति जितनी असुविधाजनक है, उतनी ही जरूरी भी। 23 मार्च 1931 को लाहौर जेल में दी गई उनकी फांसी केवल एक युवा क्रांतिकारी की हत्या नहीं थी; वह औपनिवेशिक सत्ता के खिलाफ सबसे तीखी वैचारिक चुनौती को खत्म करने की कोशिश थी और शायद इसीलिए आज भी उनके विचारों से ज्यादा उनके चित्रों को सुरक्षित रखा जाता है। भगत सिंह का जीवन किसी रोमांटिक क्रांतिकारी कथा से अधिक एक बेचैन बुद्धिजीवी की यात्रा है। जलियांवाला बाग हत्याकांड ने उनके भीतर जो ज्वाला पैदा की, वह प्रतिशोध भर नहीं थी; वह एक ऐसे समाज की तलाश थी जहां सत्ता नागरिकों से डरती हो, न कि नागरिक सत्ता से। किशोर भगत का खेतों से खून सनी मिट्टी उठाना केवल भावनात्मक प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि एक वैचारिक दीक्षा थी—अन्याय के खिलाफ असहमति का पहला पाठ।

हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन से जुड़कर उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि उनकी लड़ाई केवल अंग्रेजों से नहीं, बल्कि शोषण की हर संरचना से है। यही कारण है कि वे कार्ल मार्क्स और लेनिन को पढ़ते हैं, और क्रांति को केवल सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि सामाजिक-आर्थिक पुनर्गठन के रूप में परिभाषित करते हैं। आज जब "देशभक्ति" को नारे और प्रदर्शन में सीमित कर दिया गया है, भगत सिंह की यह वैचारिक कठोरता असहज करती है।

सांडर्स हत्याकांड और केंद्रीय विधानसभा बम कांड को अक्सर केवल हिंसक घटनाओं के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जबकि उनके पीछे की राजनीतिक रणनीति को सुविधाजनक ढंग से भुला दिया जाता है। असेंबली में फेंका गया बम जान लेने के लिए नहीं, बल्कि "बहरों को सुनाने" के लिए था—यह वाक्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है, क्योंकि सत्ता के कान आज भी उतने ही बहरे हैं, बस मंच बदल गए हैं।

जेल में उनका रूप और अधिक ख़तरनाक हो जाता है—क्योंकि वहां वे बंदूक नहीं, विचार गढ़ रहे थे। "मैं नास्तिक क्यों हूं" जैसा लेख केवल आस्था पर सवाल नहीं उठाता, बल्कि अंधभक्ति की पूरी संस्कृति को चुनौती देता है। उनका भूख हड़ताल केवल कैदियों के अधिकारों की लड़ाई नहीं, बल्कि यह घोषणा थी कि मनुष्य की गरिमा किसी भी सत्ता से बड़ी है। आज जब जेलें फिर से विचारधारा के आधार पर भरी जा रही हैं, भगत सिंह की जेल डायरी एक आईना बनकर खड़ी है। उनकी फांसी को लेकर जो विवाद हैं, वे भी कम असुविधाजनक नहीं। महात्मा गांधी और गांधी-इरविन समझौता के संदर्भ में यह सवाल बार-बार उठता है कि क्या भगत सिंह को बचाया जा सकता था। राजगुरु और सुखदेव के साथ उनकी फांसी ने एक पूरी पीढ़ी को झकझोर दिया था। लेकिन शायद इससे भी बड़ा सच यह है कि भगत सिंह खुद दया याचना के पक्ष में नहीं थे—वे अपनी मृत्यु को एक राजनीतिक हस्ताक्षर बनाना चाहते थे। यह एक ऐसा आत्मविश्वास है, जो आज की राजनीति में दुर्लभ ही नहीं, लगभग गायब है। आज के भारत में भगत सिंह की प्रासंगिकता सबसे ज्यादा इसलिए है क्योंकि उन्हें सबसे ज्यादा गलत समझा गया है। उन्हें केवल "इंकलाब जिंदाबाद" के नारे तक सीमित कर दिया गया, जबकि वे उस नारे के अर्थ को बदलना चाहते थे। उनके लिए इंकलाब का मतलब था—समानता, वैज्ञानिक सोच, और सत्ता के प्रति सतत संदेह। आज जब असहमति को देशद्रोह और प्रश्न को अपराध बना दिया जाता है, भगत सिंह का पूरा जीवन इस प्रवृत्ति के ख़िलाफ़ खड़ा दिखाई देता है।

यह भी एक विडंबना है कि जिस क्रांतिकारी ने सांप्रदायिकता को सबसे बड़ा खतरा बताया, उसी के नाम पर आज विभाजनकारी राजनीति की जाती है। जिस व्यक्ति ने कहा कि "क्रांति की तलवार विचारों की सान पर तेज होती है", उसे आज विचारविहीन नारों में समेट दिया गया है। यह केवल स्मृति का सरलीकरण नहीं, बल्कि इतिहास के साथ अन्याय है। भगत सिंह की शहादत हमें भावुक होने के लिए नहीं, असहज होने के लिए मजबूर और प्रेषित करती है। वह पूछती है—क्या हमने सच में आज़ादी को समझा? क्या यह वही देश है, जिसके लिए एक 23 साल का युवक हंसते-हंसते फांसी पर चढ़ गया? और सबसे ज़रूरी सवाल—क्या हम उस विरासत के साथ ईमानदार हैं, जिसे हम हर साल याद करने का दावा करते हैं?

अगर इन सवालों से हम बचते हैं तो भगत सिंह को याद करना एक औपचारिकता भर है। लेकिन अगर हम इनसे टकराते हैं, तो शायद कहीं न कहीं इंकलाब की वह अनुगूंज फिर सुनाई देने लगे, जो सत्ता को असहज करती है और समाज को जागृत। और आज यही समय की सबसे बड़ी ज़रूरत और मांग भी है।

रेलवे के चार मंडलों के इंस्टीट्यूट को पांच पांच लाख समेत अन्य मद में राशि पारित

सेंट्रल स्टाफ बेनिफिट कमिटी, गार्डन रिच का निर्णय

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, टाटानगर सहित दक्षिण पूर्व रेलवे के सभी चार मंडल में संचालित रेलवे इंस्टीट्यूट को सुविधा संपन्न बनाने के लिए पांच-पांच लाख रुपये मिलेंगे। दक्षिण पूर्व रेलवे के सेंट्रल स्टाफ बेनीफिट फंड कमेटी की बैठक गार्डनरीच मुख्यालय में हुई जहां यह निर्णय लिया गया।

साथ ही बोकारो स्थित रूटीन ओवर होलिंग (आरओएच) डिपो में संचालित कर्मचारियों के लिए कैंटीन में डाइनिंग टेबल व अन्य सामग्री खरीदने के लिए दो लाख रुपये, खड़गपुर वर्कशाप में संचालित मुख्य रेलवे कैंटीन में रोटी बनाने वाली मशीन खरीदने के लिए 74 हजार 975 रुपये आवंटित किए गए

इसके अलावा दक्षिण पूर्व रेलवे में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चों को उच्च तकनीकी व व्यावसायिक कोर्स के अध्ययन के लिए कर्मचारी कल्याण कमेटी की ओर से सहायता राशि प्रदान करने पर भी सहमति बनी।

साथ ही चारों मंडल में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के संचालन के लिए तीन-तीन लाख रुपये प्रदान करने पर सहमति बनी। वहीं, चारों मंडलों में चुनाव के बाद गठित प्रबंधन कमेटी द्वारा संचालित रेलवे इंस्टीट्यूट के रख-रखाव व अन्य सुविधाओं के लिए चक्रधरपुर व आद्रा मंडल को छह-छह लाख मिलेंगे

वहीं रांची-खड़गपुर व गार्डनरीच मुख्यालय के रेलवे इंस्टीट्यूट को पांच-पांच लाख रुपये स्वीकृत किए गए। बैठक में दक्षिण पूर्व रेलवे मेंस यूनियन से मंडल संयोजक मनोज कुमार सिंह, कमेटी के सचिव एसपीओएस चौधरी, ओबीसी रेलवे कर्मचारी संघ के महासचिव कृष्ण मोहन प्रसाद सहित अन्य उपस्थित थे।

शहीद-ए-आजम भगतसिंह-बसंती चोले में लिपटी अमरता: 23 मार्च की अमर क्रांति गाथा।(23 मार्च शहीद दिवस पर विशेष

-सुनील कुमार महला

शहीद-ए-आजम भगत सिंह की बहादुरी, देशभक्ति और क्रांतिकारी विचारों से आज कौन परिचित नहीं है ? उनका जन्म 28 सितंबर 1907 (कुछ स्रोतों के अनुसार 19 अक्टूबर 1907) को बंगा गांव, जिला लायलपुर (अब पाकिस्तान) में एक देशभक्त परिवार में हुआ था। उनके पिता सरदार किशन सिंह, माता विद्यावती तथा चाचा अजीत सिंह और स्वर्ण सिंह स्वतंत्रता सेनानी थे। कहते हैं कि जन्म के समय पिता और चाचा के जेल से रिहा होने पर उनकी दादी ने उन्हें 'भागों वाला' कहा था, जिससे उनका नाम 'भगत सिंह' पड़ा। पाठकों को बताता चलूं कि उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गांव में ही प्राप्त की, फिर लाहौर के डीएवी हाई स्कूल में पढ़े और बाद में लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित नेशनल कॉलेज से बीए किया।वे हिंदी, पंजाबी, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू और बांग्ला जैसी भाषाओं के ज्ञाता थे।

13 अप्रैल 1919 के जलियांवाला बाग हत्याकांड ने उनके जीवन की दिशा बदल दी थी और मात्र 12 वर्ष की छोटी-सी आयु में ही वे अमृतसर जाकर जलियांवाला बाग की रक्तरंजित मिट्टी एक बोतल में भरकर ले आए थे। उपलब्ध जानकारी के अनुसार वर्ष 1921 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आह्वान पर उन्होंने स्कूल छोड़ दिया था, किंतु चौरी-चौरा कांड के बाद आंदोलन वापस लेने से निराश होकर सशस्त्र क्रांति का मार्ग अपनाया। यहां पाठकों को बताता चलूं कि चौरी-चौरा कांड उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के चौरी-चौरा नामक स्थान पर 4 फरवरी 1922 को हुआ था, जब असहयोग आंदोलन के दौरान प्रदर्शनकारियों और पुलिस में टकराव हुआ। पुलिस की गोलीबारी से क्रोधित भीड़ ने थाने में आग लगा दी, जिसमें 22 पुलिसकर्मी मारे गए। इस हिंसा से आहत होकर महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन वापस ले लिया, जिससे स्वतंत्रता संग्राम की दिशा बदल गई। बहरहाल, यहां बता दें कि वर्ष 1926 में भगतसिंह 'नौजवान भारत सभा' की स्थापना की थी और चंद्रशेखर आजाद के साथ मिलकर 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' (एचएसआरए) का पुनर्गठन किया। लाला लाजपत राय पर हुए लाठीचार्ज के कारण हुई मृत्यु का बदला लेने हेतु उन्होंने राजगुरु और सुखदेव के साथ मिलकर 1928 में जे.पी. सांडर्स की हत्या की। बाद में, वर्ष 1929 में 'पब्लिक सेफ्टी बिल' के विरोध में उन्होंने बटुकेश्वर दत्त के साथ दिल्ली की सेंट्रल असेंबली में खाली स्थान पर बम फेंके और जानबूझकर गिरफ्तारी दी, ताकि अदालत के माध्यम से अपनी बात जनता तक पहुंचा सकें। गौरतलब है कि उनका उद्देश्य किसी की हत्या करना नहीं था, बल्कि 'बहरों को सुनाना' था। उन्होंने स्पष्ट कहा था कि-'बम और पिस्तौल क्रांति नहीं लाते, क्रांति की तलवार विचारों की सान पर तेज होती है।' यहां यह भी उल्लेखनीय है कि लाहौर सेंट्रल जेल में उन्होंने 404 पृष्ठों की डायरी लिखी, जिसमें उन्होंने कार्ल मार्क्स, टॉम पेन और विक्टर ह्यूगो जैसे विचारकों के उद्धरणों के साथ 'पूंजीवाद', 'धर्म' और 'स्वतंत्रता' पर अपने विचार दर्ज किए। इतना ही नहीं, उन्होंने कैदियों के साथ भेदभाव के विरुद्ध 116 दिनों की ऐतिहासिक भूख हड़ताल भी की और यह मांग की कि भारतीय राजनीतिक कैदियों को भी ब्रिटिश कैदियों जैसी सुविधाएं मिलें।

प्राचार्य प्रो. वज्झला रवि के दो वर्ष पूर्ण, महाविद्यालय में हर्ष का माहौल

डॉ. शंभु पंवार

नई दिल्ली, 22 मार्च। श्री वेंकटेश्वर महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्राचार्य प्रो. वज्झला रवि के सफल कार्यकाल के दो वर्ष पूर्ण होने पर महाविद्यालय परिवार ने उन्हें हार्दिक बधाई दी।

उप-प्राचार्या प्रो. नंदिता नारायणासामी व कोषाध्यक्ष डॉ. कृष्ण कुमार ने उनके नेतृत्व को सराहनीय बताते हुए कहा कि उनकी दूरदर्शी सोच से महाविद्यालय ने उल्लेखनीय प्रगति की है। प्रशासनिक अधिकारी पवन कुमार पाण्डेय ने भी उनके कुशल नेतृत्व, समर्पण और शैक्षणिक उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता की प्रशंसा की। इस अवसर पर शिक्षकों, अधिकारियों व कर्मचारियों ने प्राचार्य से भेंट कर शुभकामनाएं दीं। प्रो. रवि के नेतृत्व में महाविद्यालय ने शैक्षणिक गुणवत्ता और रैंकिंग में निरंतर सुधार दर्ज किया है तथा संस्थान प्रगति के पथ पर अग्रसर है। इस अवसर पर डॉ वंदना मल्होत्रा, मदन लाल गौतम, जय प्रकाश मिश्रा, अनुभाग अधिकारी मद्दुरी लक्ष्मी नरसिंह मूर्ति, राजीव गोयल, पुरुषोत्तम झा, विकास मोतला, सुदेश कुमार, मोहित, कुमार आशीष, यू.आर.आर. नरेंद्र, मधुसूदन, अलिसा, अरुण शर्मा, धर्मेंद्र महतो , अंशुल, उमा देवी, शारदा, पंकज भाटी, शुभम, दया राम, मनोज कुमार, असीम अली, विष्णु आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

आज का युवा और भगत सिंह

शम्भू शरण सत्यार्थी

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में कुछ ऐसे व्यक्तित्व हैं जिनकी चमक समय के साथ कम नहीं होती, बल्कि और अधिक उज्ज्वल होती जाती है। ऐसा ही एक महान नाम है भगत सिंह। वे केवल एक साहसी क्रांतिकारी ही नहीं थे, बल्कि एक गहरे चिंतक, अध्ययनशील युवक और दूरदर्शी विचारक भी थे। उनका जीवन बहुत छोटा था, परंतु उनके विचार इतने व्यापक और गहरे थे कि आज भी वे भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा का सबसे बड़ा स्रोत बने हुए हैं। जब हम आज के युवा और भगत सिंह के विचारों के बीच संबंध को देखते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि उनके आदर्श केवल इतिहास की स्मृति नहीं हैं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी मार्गदर्शक हैं।

आज का भारत स्वतंत्र है, लोकतांत्रिक है और तेजी से बदलती दुनिया के साथ कदम मिला रहा है। विज्ञान और तकनीक ने जीवन को आसान बना दिया है। इंटरनेट, सोशल मीडिया और वैश्विक अवसरों ने युवाओं के सामने नई संभावनाओं के द्वार खोल दिए हैं। आज का युवा दुनिया की हर जानकारी तक आसानी से पहुँच सकता है, नए विचारों को समझ सकता है और अपने जीवन के लिए नए रास्ते चुन सकता है। लेकिन इसके साथ-साथ अनेक चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। बेरोजगारी, प्रतिस्पर्धा का दबाव, सामाजिक असमानता, मानसिक तनाव, उपभोक्तावाद और राजनीतिक ध्रुवीकरण जैसे मुद्दे आज के युवाओं को प्रभावित कर रहे हैं। ऐसे समय में यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है कि क्या भगत सिंह के विचार आज भी युवाओं के लिए प्रासंगिक हैं? यदि हम उनके जीवन और विचारों को गहराई से समझें, तो इसका उत्तर स्पष्ट रूप से "हाँ" में मिलता है।

भगत सिंह का जन्म 28 सितंबर 1907 को पंजाब के एक ऐसे परिवार में हुआ था जहाँ देशभक्ति की भावना पहले से ही मौजूद थी। उनके पिता और चाचा स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े हुए थे। बचपन से ही उनके मन में देश के प्रति गहरा प्रेम था, लेकिन उनकी देशभक्ति केवल भावनात्मक नहीं थी। वे एक गंभीर अध्ययनशील युवक थे। उन्होंने इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और दर्शन के अनेक ग्रंथों का अध्ययन किया। वे दुनिया के विभिन्न क्रांतिकारी आंदोलनों से भी प्रभावित थे और उन्होंने यह समझ लिया था कि केवल अंग्रेजों को देश से बाहर निकाल देना ही स्वतंत्रता का अंतिम लक्ष्य नहीं है। असली लक्ष्य एक ऐसे समाज का निर्माण होना चाहिए जहाँ शोषण, अन्याय और असमानता समाप्त हो जाए।

भगत सिंह ने क्रांति की जो परिभाषा दी, वह बहुत गहरी और व्यापक थी। उन्होंने स्पष्ट कहा था कि क्रांति का अर्थ केवल बम और पिस्तौल नहीं है। उनके अनुसार क्रांति का वास्तविक अर्थ समाज की उस व्यवस्था को बदलना है जिसमें कुछ लोग दूसरों का शोषण करते हैं। वे एक ऐसे भारत का सपना देखते थे जहाँ हर व्यक्ति को समान अवसर मिले, जहाँ जाति, धर्म और आर्थिक स्थिति के आधार पर किसी के साथ भेदभाव न किया जाए, और जहाँ समाज न्याय और मानवता के सिद्धांतों पर आधारित हो।

भगत सिंह की सबसे बड़ी विशेषताओं में से एक उनका अध्ययनशील स्वभाव था। वे हमेशा किताबों से घिरे रहते थे। जेल में रहने के दौरान भी उन्होंने अनेक पुस्तकों का अध्ययन किया और कई महत्वपूर्ण लेख लिखे। उनका प्रसिद्ध लेख "मैं नास्तिक क्यों हूँ" यह दर्शाता है कि वे हर विचार को तर्क और विवेक के आधार पर परखते थे। वे अंधविश्वास और रूढ़िवादिता के विरोधी थे और वैज्ञानिक सोच को बहुत महत्व देते थे। यह विशेषता आज के युवाओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण संदेश देती है। आज के समय में सूचना प्राप्त करना बहुत आसान हो गया है, लेकिन सूचनाओं के बीच सत्य और असत्य को पहचानना और गहराई से सोचने की क्षमता विकसित करना अधिक जरूरी हो गया है।

आज का युवा तकनीक के युग में जी रहा है। इंटरनेट और डिजिटल माध्यमों ने ज्ञान की दुनिया को उसके सामने खोल दिया है। शिक्षा, रोजगार और उद्यमिता के नए अवसर मौजूद हैं। लेकिन इसके साथ-साथ कई समस्याएँ भी हैं। प्रतिस्पर्धा का दबाव बढ़ रहा है, बेरोजगारी युवाओं के लिए बड़ी चुनौती बनी हुई है और कई बार युवाओं के सामने जीवन की दिशा स्पष्ट नहीं होती। सोशल मीडिया ने संवाद के नए मंच दिए हैं, लेकिन कई बार यह सतही बहसों और भावनात्मक प्रतिक्रियाओं का माध्यम भी बन जाता है। ऐसे वातावरण में युवाओं के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे गंभीर अध्ययन और चिंतन की आदत विकसित करें।

आज के समय में उपभोक्तावाद भी तेजी से बढ़ा है। सफलता का अर्थ अक्सर धन, पद और भौतिक सुविधाओं से जोड़ दिया जाता है। बहुत से युवा अपने जीवन का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत सफलता तक सीमित कर लेते हैं। समाज और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी की भावना कई बार पीछे छूट जाती है। भगत सिंह का जीवन इस प्रवृत्ति के विपरीत एक प्रेरणा प्रस्तुत करता है। उन्होंने व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं का त्याग करके राष्ट्र और समाज के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। उनका जीवन यह सिखाता है कि व्यक्ति का जीवन केवल अपने लिए नहीं, बल्कि समाज और मानवता के लिए भी होना चाहिए।

भगत सिंह का सपना केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था। वे सामाजिक और आर्थिक न्याय के भी समर्थक थे। उनका मानना था कि जब तक समाज में अमीरी और गरीबी की गहरी खाई बनी रहेगी, तब तक सच्ची स्वतंत्रता संभव नहीं है। आज भी भारत में आर्थिक असमानता एक बड़ी समस्या है। समाज के कई वर्ग अभी भी शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार जैसी बुनियादी सुविधाओं से वंचित हैं। ऐसे में युवाओं की जिम्मेदारी है कि वे केवल अपने व्यक्तिगत हितों तक सीमित न रहें, बल्कि समाज के कमजोर और वंचित वर्गों के लिए भी आवाज उठाएँ।

भगत सिंह ने अपने समय में ही सांप्रदायिक राजनीति के खतरों को पहचान लिया था। वे मानते थे कि धर्म और जाति के आधार पर समाज को बाँटना राष्ट्र के लिए अत्यंत हानिकारक है। उन्होंने युवाओं से अपील की थी कि वे सांप्रदायिकता और संकीर्णता से ऊपर उठकर मानवता को सर्वोच्च मानें। आज के समय में यह संदेश और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। यदि युवा आपसी मतभेदों से ऊपर उठकर राष्ट्रीय एकता और सामाजिक सद्भाव को प्राथमिकता दें, तो समाज में शांति और विकास की संभावनाएँ बढ़ सकती हैं।

भारत आज दुनिया के सबसे युवा देशों में से एक है। यहाँ युवाओं की बड़ी आबादी है और यह देश की सबसे बड़ी शक्ति है। यदि यह युवा शक्ति सकारात्मक दिशा में काम करे, तो भारत को विकास की नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया जा सकता है। लेकिन यदि यह शक्ति दिशाहीन हो जाए, तो यह समाज के लिए चुनौती भी बन सकती है। इसलिए युवाओं के लिए यह आवश्यक है कि वे अपनी ऊर्जा और प्रतिभा का उपयोग केवल व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के निर्माण के लिए भी करें।

भगत सिंह का जीवन युवाओं को यह सिखाता है कि जोश के साथ-साथ विवेक भी जरूरी है, साहस के साथ-साथ ज्ञान भी आवश्यक है और देशभक्ति के साथ-साथ सामाजिक जिम्मेदारी भी महत्वपूर्ण है। आज के युवाओं के सामने अनेक व्यावहारिक चुनौतियाँ हैं—उन्हें शिक्षा प्राप्त करनी है, रोजगार पाना है और अपने परिवार की जिम्मेदारियाँ निभानी हैं। लेकिन इन सबके बीच भी वे अपने आदर्शों को जीवित रख सकते हैं। यदि युवा अपने जीवन में ईमानदारी, जागरूकता और सामाजिक जिम्मेदारी को स्थान दें, तो वे न केवल अपने जीवन को बेहतर बना सकते हैं बल्कि देश और समाज के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

अंततः यह कहा जा सकता है कि भगत सिंह केवल इतिहास के पन्नों में दर्ज एक महान क्रांतिकारी नहीं हैं, बल्कि वे आज भी युवाओं के विचारों और सपनों में जीवित हैं। उनका जीवन साहस, त्याग, ज्ञान और सामाजिक न्याय की प्रेरणा देता है। आज के युवाओं के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वे तेजी से बदलती दुनिया में अपने मूल्यों को बनाए रखें और अपने ज्ञान, ऊर्जा और प्रतिभा का उपयोग समाज और राष्ट्र के निर्माण में करें। यदि आज का युवा भगत सिंह के विचारों से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को दिशा देता है, तो वह निश्चित रूप से उस भारत के निर्माण में योगदान दे सकता है जिसका सपना भगत सिंह ने देखा था—एक ऐसा भारत जो न्यायपूर्ण, समानतापूर्ण, जागरूक और मानवीय मूल्यों पर आधारित हो।

परमाणु छाया में सुलगता पश्चिम एशिया- ईरान- इजरायल - अमेरिका टकराव, रेडिएशन का खतरा- कैंसर, जन्मजात विकृतियां, प्रतिरक्षा प्रणाली का कमजोर होना और दीर्घकालिक पर्यावरणीय क्षति -समग्र विश्लेषण

परमाणु ठिकानों पर हमले, रेडिएशन का खतरा, ऊर्जा युद्ध और महाशक्तियों की भागीदारी, ये सभी संकेत एक बड़े संकट की ओर इशारा करते हैं, जिसे संवाद से हल करना जरूरी –एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर पश्चिम एशिया में चल रहा संघर्ष अब पारंपरिक सैन्य टकराव की सीमाओं को पार कर एक ऐसे खतरनाक मोड़ पर पहुंच चुका है,जहां परमाणु ठिकाने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से युद्ध का केंद्र बनते जा रहे हैं।ईरान, इजरायल और अमेरिका के बीच बढ़ती सैन्य गतिविधियों ने न केवल क्षेत्रीय अस्थिरता को बढ़ाया है,बल्कि वैश्विक स्तर पर एक बड़े परमाणु संकट की आशंका भी उत्पन्न कर दी है। हालिया घटनाओं में जिस तरह परमाणु संयंत्रों और अनुसंधान केंद्रों को निशाना बनाया जा रहा है, उसने यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या दुनियाँ एक और परमाणु आपदा के मुहाने पर खड़ी है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि युद्ध के 23वें दिन तक आते- आते संघर्ष की प्रकृति में स्पष्ट बदलाव दिखाई देने लगा है।पहले जहां सैन्य ठिकानों,सीमावर्ती क्षेत्रों और रणनीतिक बुनियादी ढांचे को निशाना बनाया जा रहा था, वहीं अब परमाणु प्रतिष्ठानों पर हमले शुरू हो गए हैं। इजरायल द्वारा ईरान के नतांज परमाणु सुविधा पर की गई एयरस्ट्राइक इस दिशा में एक निर्णायक कदम थी। नतांज ईरान के परमाणु कार्यक्रम का केंद्र है, जहां यूरेनियम संवर्धनका कार्य होता है।इसके जवाब में ईरान ने इजरायल के डिमोना परमाणु केंद्र के आसपास मिसाइल हमले किए।यह केंद्र इजरायल की परमाणु क्षमता का सबसे महत्वपूर्ण आधार माना जाता है। इस प्रकार दोनों पक्षों द्वारा परमाणु ठिकानों को निशाना बनाना केवल सैन्य रणनीति नहीं, बल्कि एक खतरनाक जुआ है, जिसके परिणाम दूरगामी और विनाशकारी हो सकते हैं।रेडिएशन का बढ़ता खतराः मानवता के लिए अदृश्य दुश्मन है, परमाणु संयंत्रों पर हमले का सबसे बड़ा खतरा केवल विस्फोट नहीं,बल्कि रेडिएशन लीक है।परमाणु संयंत्रों में यूरेनियम और प्लूटोनियम जैसे अत्यधिक रेडियोधर्मी तत्व मौजूद होते हैं। यदि किसी हमले में इनका रिसाव होता है, तो उसका प्रभाव केवल तत्काल क्षेत्र तकसीमित नहीं रहता, बल्कि हवा, पानी और मिट्टी के माध्यम से हजारों किलोमीटर तक फैल सकता है।रेडिएशन के प्रभाव बेहद गंभीर होते हैं,कैंसर, जन्मजात विकृतियां, प्रतिरक्षा प्रणाली का कमजोर होना और दीर्घकालिक पर्यावरणीय क्षति। चेरनोबिल दुर्घटना और फुकुशिमा परमाणु दुर्घटना इसके ज्वलंत उदाहरण हैं, जिनके प्रभाव आज भी महसूस किए जा रहे हैं। यदि पश्चिम एशिया में इसी प्रकार की कोई घटना घटती है, तो उसका प्रभाव वैश्विक स्तर पर महसूस किया जाएगा।

साथियों बात अगर हम अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी यानें (आईएईए) की भूमिका और ताजा स्थिति को समझने की करें तो इन बढ़ती आशंकाओं के बीच अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण हो जाती है।एजेंसी ने हाल ही में डिमोना क्षेत्र में हुए हमले के बाद स्पष्ट किया कि नेगेव परमाणु अनुसंधान केंद्र को किसी प्रकार की क्षति के संकेत नहीं मिले हैं और विकिरण स्तर सामान्य हैं। यह राहत की खबर जरूर है, लेकिन यह स्थिति अस्थायी भी हो सकती है, क्योंकि युद्ध अभी जारी है और किसी भी समय हालात बदल सकते हैं।आईएईए लगातार क्षेत्रीय देशों के साथ संपर्क में है और रेडिएशन स्तर की निगरानी कर रही है। लेकिन सवाल यह है कि क्या केवल निगरानी पर्याप्त है, या वैश्विक समुदाय को इस संकट को रोकने के लिए ठोस कदम उठाने होंगे?

साथियों बात अगर हम डिमोना और नतांजः क्यों हैं इतने महत्वपूर्ण? इसको समझने की करें तो डिमोना और नतांज केवल दो परमाणु केंद्र नहीं हैं, बल्कि ये दोनों देशों की सामरिक शक्ति के प्रतीक हैं। डिमोना, जिसे दुनिया के सबसे सुरक्षित परमाणु स्थलों में गिना जाता है, इजरायल की कथित परमाणु हथियार क्षमता का आधार है। यहां अत्याधुनिक सुरक्षा व्यवस्था, जैसे आयरन डोम और एरो मिसाइल सिस्टम तैनात हैं। वहीं नतांज ईरान के परमाणु कार्यक्रम का हृदय है, जहां सैकड़ों सेंट्रीफ्यूज यूरेनियम को समृद्ध करने का कार्य करते हैं। इन दोनों ठिकानों पर हमला केवल सैन्य कार्रवाई नहीं, बल्कि विरोधी देश की रणनीतिक क्षमता को कमजोर करने का प्रयास है।

साथियों बात अगर हम अमेरिका की भूमिका और बढ़ता दबाव इसको समझने की करें तो इस संघर्ष में अमेरिका की भूमिका भी बेहद अहम है। डोनाल्ड ट्रंप द्वारा ईरान को दिया गया 48 घंटे का अल्टीमेटम स्थिति को और अधिक गंभीर बना देता है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि यदि ईरान होर्मुज जलडमरूमध्य को नहीं खोलता है, तो अमेरिका ईरान के बिजली संयंत्रों को निशाना बनाएगा। यह चेतावनी केवल सैन्य धमकी नहीं बल्कि आर्थिक और रणनीतिक दबाव का भी हिस्सा है।होर्मुज जलडमरूमध्य वैश्विक तेल आपूर्ति का प्रमुख मार्ग है, और इसके बंद होने से विश्व अर्थव्यवस्था पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है।ईरान ने भी जवाब में अमेरिकी और इजरायली ऊर्जा तथा आईटी बुनियादी ढांचे को निशाना बनाने की चेतावनी दी है, जिससे साइबर और ऊर्जा युद्ध की संभावना भी बढ़ गई है।यदि यह संघर्ष और बढ़ता है, तो इसका सबसे बड़ा असर वैश्विक ऊर्जा बाजार पर पड़ेगा। पश्चिम एशिया दुनिया के तेल और गैस का प्रमुख स्रोत है। होर्मुज जलडमरूमध्य के बंद होने या अस्थिर होने से तेल की कीमतों में भारी उछाल आ सकता है, जिससे वैश्विक महंगाई और आर्थिक मंदी की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।भारत जैसे देशों के लिए, जो ऊर्जा आयात पर निर्भर हैं, यह स्थिति विशेष रूप से चिंताजनक है। पेट्रोल-डीजल की कीमतों में वृद्धि, औद्योगिक लागत में बढ़ोतरी और आर्थिक विकास दर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

ऐतिहासिक पोडाहाट राज्य से भंडारी साही आई मां व्याघ्र वाहिनी की वार्षिक पूजा संपन्न

वैष्णव के साथ साथ शैव्य- शाक्तेय परंपरा की माटी है विश्व प्रसिद्ध सरायकेला नगरी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला , सरायकेला से महज छह किलोमीटर दक्षिण स्थित भंडारी साही गांव जहां हर वर्ष की भांति चैत्र रविवार को निर्धारित ₹ बाघ वाहिनी₹ - यानी शेरावाली की विधिवत पूजा अर्चना भव्यता के साथ हुई ।इस अवसर पर हजारों की तादाद में दुर दुर गांव से आये लोगों ने उपवास के साथ मां की पूजा अर्चना की । सबसे बड़ी बात एक एक दवा जो औषधि के रूप में यहां दी जाती है इसके लिए होड़ शदियों से लगता आया है देवी मां के प्रांगण मे इस दिन। जिस सिंहभूम की अधिष्ठात्री देवी ऐतिहासिक पाउडी का आगमन पोड़ाहाट क्षेत्र से हुआ है वैसे ही इस देवी का भी आगमन उसी पोड़ाहाट से इस गांव में बसने हेतु उनके स्वयं के निर्देश पर हुआ था ।

सरायकेला,जो ओडिशा का एक देशी रियासत रहा यहां जगन्नाथ संस्कृति के साथ शैव्य- शक्ति परंपरा का आगाज न केवल भारत वल्कि विश्व के कला व आध्यात्मिक पटल पर गुंजायमान होता है छावनी से आया छऊ के नाम पर ।यहां के भंडारी साही (भंडार साही) व रूड़ासाही गांव में उसका अपना एक खास महत्व रहता रहा है । जहां हजारों की तादाद में न केवल इस प्रखंड वल्कि अन्य प्रखंडों, जिलों यहां तक की राज्यों से भी लोग दर्शन करने आते हैं । शेर के ऊपर बैठी देवी ओड़िया भाषा में इन्हें बाघ वाहिनी कहते हैं । ओड़िया में जहां रूड़ा का मतलब इकठ्ठा करना होता है । रूड़ा साई मुख्यत इकठ्ठा हेतु नामित था । वैसे भंडारी साही युद्ध आयुध रखने एवं सैन्य परंपरा का गांव रहा जब इलाका मयूरभंज राज्य अन्तर्गत अतीत में था ।

इस देवी का आगमन बड़ा रोचक प्रसंग बताया जाता है । इनका आगमन क्षेत्र मे तब हुआ जब इस गांव के मिट्टी कटने वाले कोड़ा समुदाय के लोग वहां काम के सिलसिले में पोड़ाहाट गये थे । जहां उनके बच्चों को देवी की एक मूर्ति मिली थी । बच्चे दिनभर उस मूर्ति के साथ खेलते रहे फिर जब रात हूई सब खाना खा कर उसी जंगली इलाके मे सो गये ।अनायास देर रात शेर के दहाड़ की गूंज सुनाई दी । तब सब जग गये फिर सुरक्षित जगह पर जा कर पुनः सो गये । उक्त जगह पर एक बुजुर्ग को सपना आया कि सुमनों मैं इस मूर्ति ही बोल रही हुं , जिसमें बच्चे दिन भर खेल रहे थे ।तुमलोग मुझे अपने गांव ले चलों । वगैर देर किये रात में सभी चल दिए इसी भंडार साही ,रूड़ा साही की और । देवी की निर्देश अनुसार स्थापना की गयी । फिर आरंभ हुआ उनका पूजन । जिसे भारी संख्या में आज भी लोग पूजते है चैत्र मास में ।अनका दवा काफी कारगर मानी जाती है इलाके में ।

झारखंड के हजारीबाग जिले में आठ उग्रवादी गिरफ्तार

दो इंसास राइफल,1*0कारतुस ,एक पिस्टल, वाहन , मोबाइल आदि बरामद

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची , हजारीबाग के उरीमारी ओपी क्षेत्र में पुलिस ने प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन टीएसपीसी के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए आठ उग्रवादियों को हथियारों के साथ गिरफ्तार किया है. यह कार्रवाई मिली गुप्त सूचना के आधार पर की गई है, जिसमें बताया गया था कि कोलियरी क्षेत्र में उग्रवादी किसी बड़ी आपराधिक घटना को अंजाम देने की फिराक में हैं.

सूचना के बाद पुलिस अधीक्षक अंजनी अंजन के निर्देश पर एक विशेष छापेमारी दल का गठन किया गया. टीम जब आसवा और गुडकुया गांव के पास पहुंची, तभी उरेज गांव की ओर से आ रही एक सफेद गाड़ी पुलिस को देखकर तेजी से मुड़कर भागने लगी. जिसके बाद पुलिस ने पीछा किया लेकिन भागने की कोशिश में गाड़ी अनियंत्रित होकर सड़क किनारे पुल और पेड़ से टकराकर दुर्घटनाग्रस्त हो गई.

दुर्घटना के बाद वाहन में सवार सभी लोग भागने का प्रयास कर रहे थे, लेकिन पुलिस ने चारों ओर से घेराबंदी कर उन्हें दबोच लिया. तलाशी के दौरान वाहन में बैठे उग्रवादियों के पास से दो इंसास राइफल समेत भारी मात्रा में जिंदा कारतूस मिले हैं. पूछताछ में सभी ने अपने नाम-पते बताए और संगठन से जुड़े होने की पुष्टि हुई.

गिरफ्तार उग्रवादियों की पहचान लातेहार और रांची जिलों के विभिन्न थाना क्षेत्रों के रहने वाले के रूप में हुई है. पुलिस के अनुसार, ये सभी प्रतिबंधित टीएसपीसी संगठन के जोनल और सब-जोनल कमांडरों के निर्देश पर लेवी वसूली, दहशत फैलाने और आपराधिक घटनाओं को अंजाम देने में सक्रिय थे. हाल ही में रामगढ़ जिले के पतरातू क्षेत्र में हुई फायरिंग की घटना में भी इनकी संलिप्तता सामने आई है

पुलिस ने इनके पास से दो इंसास राइफल, विभिन्न बोर के कुल 130 से अधिक जिंदा कारतूस, एक देसी पिस्टल, एक बोलेरो वाहन और सात मोबाइल फोन बरामद किए हैं. वहीं इस मामले में पुलिस का कहना है कि समय रहते की गई इस कार्रवाई से एक बड़ी घटना को टाल दिया गया है.

शहीद भगत सिंह की शहादत को समर्पित रक्तदान शिविर का आयोजन

अमृतसर, 22 मार्च (साहिल बेरी)

जीटी रोड छेहरटा स्थित शहीद मदन लाल ढींगरा यूथ वेलफेयर क्लब द्वारा चेयरमैन सतीश पुंज के नेतृत्व में शहीद भगत सिंह की शहादत को समर्पित रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 100 से अधिक लोगों ने रक्तदान किया।

शिविर का उद्घाटन माता आरती देवा जी, जिला प्रधान हरविंदर सिंह संधू, पूर्व सांसद श्वेत मलिक, सुशील देवगन, भाजपा कार्यकर्ता समीर शर्मा, भगवा सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज दवेसर, पश्चिम हलका इंचार्ज एडवोकेट कुमार अमित, राकेश गिल, काउंसलर गौरव गिल, पंजाब सचिव सूरज भारद्वाज, पंजाब महिला मोर्चा सचिव सतिंदरजीत कौर, आप नेता धर्मजीत बॉबी, हरिंदर अग्रवाल, परमजीत बत्रा तथा वरिष्ठ कांग्रेसी नेता सतीश बल्लू द्वारा किया गया।

इस अवसर पर सतीश पुंज और अन्य नेताओं ने कहा कि रक्तदान एक महान दान है, जो हर व्यक्ति को अपने जीवन में अवश्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि रक्तदान जहां किसी को जीवनदान देता है, वहीं यह दान करने वाले व्यक्ति की सेहत के लिए भी लाभकारी होता है। उन्होंने यह भी कहा कि रक्तदान के बाद किसी प्रकार की कमजोरी नहीं होती और शरीर में रक्त अपने आप पूरा हो जाता है।

सतीश पुंज ने लोगों से अपील की कि वे किसी की जान बचाने के लिए रक्तदान करने में हिचकिचाएं नहीं और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें। इस मौके पर रक्तदाताओं को प्रमाण पत्र और रिफ्रेशमेंट दिए गए। चेयरमैन सतीश पुंज ने अतिथियों को विशेष रूप से सम्मानित भी

किया।

इस अवसर पर जोगिंदर अटवाल, मंडल प्रधान सनी शर्मा, दविंदर पहलवान, करण बेरी, सुमित बेदी, अनिल डारा, शैंकी अरोड़ा, आशु पंडित, अरविंदर अरोड़ा, रघु पंडित, मनजीत मिंटा, पन्ना लाल भारद्वाज, सतीश मंटू, राजू गुप्ता, स्वामी हरि नारायण गिरी जी सहित कई अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

अगर आज जल सरंक्षण नही किया तो आने वाले समय में पंजाब बन जाऐगा रेगिस्तान: जितेंद्र सिहं भाटिया

अमृतसर 22 मार्च साहिल बेरी

अमृतसर नगर निगम द्वारा द्वारा विश्व जल दिवस के अवसर पर जल संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए करवाई गई वॉकाथॉन को मेयर जितेंद्र सिहं भाटिया द्वारा हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया गया। रणजीत एवन्यू-डी ब्लॉक में आयोजित की गई वॉकाथॉन में बच्चों, बुजर्गों और युवाओं ने भारी तादाद में हिस्सा लेकर जल सरंक्षण का संदेश दिया। इस अवसर पर मेयर जितेंद्र सिहं भाटिया ने वॉकाथॉन में आए हुए प्रतिभागियों से कहा कि पानी के बिना जीवन की कल्पना नही की जा सकती, और आज इंसान की दूसरे ग्रहों में जाकर बसने की संभावनाए भी वहां पर पानी की मौजूदगी पर ही टिकी हुई हैं। उन्होंने कहा की पंजाब का नाम भी पानी से संबंधित है और हजारों साल पुरानी हमारी सभ्यता का जन्म, विकास और अस्तित्व भी पानी के कराण ही है। लेकिन पिछले काफी समय से भूजल के अंधाधुंध प्रयोग और गेहूं और धान की खेती पर अधिक निर्भरता के कराण पंजाब में भूजल का स्तर काफी नीचे चला गया है और अगर ऐसा ही चलता रहा तो आने वाले समय में पंजाब रेगिस्तान भी बन सकता है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए पंजाब सरकार ने सिंचाई के लिए नहरी पानी को प्राथमिकता देते हुए नहरों को पक्का किया गया, परिणामस्वरूप सिंचाई के लिए नहरी पानी के प्रयोग में बढ़ोत्तरी हुई और काफी सालों में पहली बार पंजाब में भूजल का स्तर भी बढ़ा है। उन्होंने शहरवासियों से अपील करते हुए कहा कि वह पानी का प्रयोग संयम से करें तथा पानी को व्यर्थ ना करें।

वहीं पंजाब म्यूनिसिपल सर्वसिस इंप्रूवमेंट प्रोजेक्ट के प्रोजेक्ट मैनेजर कुलदीप सिहं सैनी ने बताया की वॉटर रिसोर्स ऑफ पंजाब 2024 रिपोर्ट के अनुसार अमृतसर जिले के सभी दस ब्लॉक डार्क जोन घोषित किए गए हैं। अमृतसर अर्बन ब्लाक में ही भूजल कि निकासी तीन सौ प्रतिशत से ऊपर चली गई है। जिसका मतलब है कि भूजल के रिचार्ज होने की सालाना दर से तीन गुना अधिक पानी को निकाला जा रहा है। इसलिए शहर में पानी के स्पालई के लिए ज्यादा समय तक भूजल पर निर्भर नही रहा जा सकता। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए सरकार द्वारा शहर में स्थायी और शुद्ध जल आपूर्ति सुनिश्चित करने के उद्देश्य से अमृतसर बल्क वाटर स्पालई प्रोजेक्ट की शुरूआत की गई है। जिसके तहत आने वाले समय में अपर बारी दौआब नहर के पानी को साफ करके पानी की स्पालई की जाएगी। जिसके तहत वल्ला में 44 करोड़ लीटर क्षमता वाले वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट का निर्माण, 112 लंबी पाइपलाईन बिछाने के साथ-साथ 39 नई टैंकियों का निर्माण और 24 पुरानी टैंकियों का नवीनिकरण किया जा रहा है और बहुत जल्द ही इस प्रोजेक्ट के तहत पानी की स्पालई भी शुरू हो जाऐगी।

वहीं इस मौके पर निगम के सहायक कमिश्नर रजिदंर शर्मा ने कहा कि अगर हम अपने दैनिक जीवन में कुछ बदलाव करे तो आसानी से जल सरक्षंण कर सकते हैं, जैसे वाशिंग मशीन को उसकी पूरी क्षमता में प्रयोग करना, नहाने के लिए शावर का प्रोयग ना करके बाल्टी का प्रयोग करना, टैंकियों में ओवरफ्लों अलार्म लगाना, घरों में लीक होने वाले नल को समय रहते ठीक करवाना, गाड़ी को सीधा पानी की पाईप की जगह गीले कपड़े का प्रयोग करके धोना आदि। इस मौके पर इंदू वर्मा, अश्वनि कुमार आदि भी उपस्थित थे।

गणगौर की विदाई: श्रद्धा व परंपरा का संगम सत्यनारायण मंदिर से निकली शोभायात्रा

बाबा तालाब तट पर विधि-विधान से हुआ विसर्जन

राजगांगपुर: मारवाड़ी समाज द्वारा मनाया जाने वाला आस्था और परंपरा से जुड़ा गणगौर पर्व इस वर्ष भी राजगांगपुर में पूरे उत्साह, श्रद्धा और भक्ति भाव के साथ संपन्न हुआ। पर्व के समापन अवसर पर शहर का वातावरण भक्तिमय हो उठा, जब माता गौरी और भगवान शिव के जयकारों से गलियां गूंज उठीं। गणगौर विसर्जन के अवसर पर सत्यनारायण मंदिर से एक भव्य शोभायात्रा निकाली गई। गणगौर की प्रतिमा को सुसज्जित रथनुमा वाहन पर विराजमान कर यात्रा की शुरुआत हुई। रथ के पीछे बड़ी संख्या में महिलाएं और युवतियां पारंपरिक राजस्थानी वेशभूषा में सजी-धजी, मधुर गणगौर गीत गाते हुए चल रही थीं, जिससे पूरा माहौल सांस्कृतिक रंग में रंग गया।यह शोभायात्रा मंदिर से प्रारंभ होकर खाड़ा गली होते हुए बाबा तालाब तट तक पहुंची, जहां विधि-विधान के साथ गणगौर प्रतिमा एवं ज्वार का विसर्जन किया गया। विसर्जन से पूर्व महिलाओं ने श्रद्धापूर्वक पूजा-अर्चना कर परिवार की सुख-समृद्धि और दांपत्य जीवन की खुशहाली की कामना की। इस दौरान महिलाओं ने एक-दूसरे को गुलाल लगाकर खुशियां भी साझा कीं।

गणगौर पर्व, जो भगवान शिव (गण) और माता पार्वती (गौरी) के पावन मिलन का प्रतीक माना जाता है, विशेष रूप से महिलाओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। यह पर्व वैवाहिक सुख, प्रेम और समर्पण का प्रतीक है। राजस्थान में इसकी विशेष धूम रहती है, लेकिन राजगांगपुर में मारवाड़ी समाज द्वारा इसे जिस भव्यता और परंपरा के साथ मनाया गया, उसने सभी का मन मोह लिया।

पूरे आयोजन के दौरान श्रद्धा, संस्कृति और परंपरा का अद्भुत संगम देखने को मिला, जिसने शहरवासियों के दिलों में अपनी विशेष छाप छोड़ी।

झारखंड में ओडिय़ अकादमी गठन की मांग साथ नाटक मंचन का हुआ उद्घाटन

सरायकेला राजा , खरसावां राजा -रानी समेत समेत विधायक ने सपत्नीक किया उद्घाटन

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला , खरसावां के राजमहल चैक (गोपबंधु चैक) में झारखंड सरकार का कला एवं संस्कृति विभाग रांची तथा ओडिशा सरकार का भाषा, साहित्य एवं संस्कृति विभाग (भुवनेश्वर) का सहयोग से भाषा उत्थान एसोसिएशन खरसावां के द्वारा चार दिवसीय राज्य स्तरीय ओडिया नाटक प्रतियोगिता-2026 का शुभआरंभ हुआ ।

सरायकेला राजा आदित्य प्रताप सिंहदेव, खरसावां राजा गोपाल नारायण सिंहदेव, महारानी अपराजिता सिंहदेव आदि ने दीप प्रज्वलित कर किया नाटक आयोजन का श्रीगणेश । साथ ही विधायक दशरथ गागराई एवं उनकी पत्नी बसंती गगराई समेत प्रमुख मुनेंद्र जामुदा आदि मंच पर उपस्थित थे ।

चार दिनो तक चलने वाली राज्य स्तरीय ओडिया नाटक प्रतियोगिता के पहले दिन सबुज संघ कला निकेतन (केरा) के कलाकारों ने "किणिनेला मनो कलानगर " सामाजिक ओडिया नाटक का भव्य मंचन किया। इसके अलावे श्री श्री मां मनसा ओपेरा (दलकी) द्वारा ₹राखी देइगला अखिरे लुह, मां शीतला गीतिनाट्य समाज (जामबनी) द्वारा शीतला मंगल नाम जगति पाला तथा गोपाबंधु नाटक विभाग (खांडामौदा) द्वारा' ए जुगर बिशाल्य करणी 'का मंचन किया जाएगा।

जिस पर विशेष जोर दिया जा रहा है। इसका उद्देश्य ओडिया अस्मिता को मजबूत करना है। समृद्ध विरासत को संरक्षित करना और नई पीढी को अपनी भाषा से जोडना है। उन्होने कहा कि इसकी समृद्धि और सुंदरता हमें विशिष्ट बनाती है। हमारी परंपराओं, संस्कृति और विरासत की रक्षा के लिए भाषा का संरक्षण और संवर्धन अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके पहले सभी अतिथियों ने पूर्व सांसद स्वंगीय रूद्र प्रताप सांडगी, झारखंड राज्य अल्पसंख्यक आयोग के उपाध्यक्ष स्वंगीय के सी दास एवं खरसावां के उत्कल संतान स्वंगीय डॉ बी एन कर के चित्र के साथ पंडित उत्कल मणी गोपबंधु दास के आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धाजंलि दी।

सरायकेला राजा आदित्य प्रताप सिंहदेव ने सरायकेला खरसावां जिले के ओडिया स्कूलों में उडिया शिक्षक की नियुक्ति हो और उडिया पुस्तक वितरण किया जाए। साथ ही ओडिया अकादमी का गठन करने की मांग करते हुए कहा कि ओडिया भाषा संस्कृति को संरक्षित कर रखना हमारे लिए गर्व की बात है। सरायकेला खरसावां जिले में पूजा परंपरा और भाषा संस्कृति, कला संस्कृति जीवित है और आगे भी जीवित रहेगा। उन्होंने कहा कि तत्कालीन बिहार सरकार सरायकेला की कला संस्कृति को दमन करने का प्रयास किया था। लेकिन सफल नही हुआ। बिहार से अलग होकर अलग झारखंड राज्य बनने के बाद झारखंड के तत्कालीन पूर्व मुख्यमंत्री सह तत्कालीन विधायक अर्जुन मुंडा ने ओडिया भाषा को द्वितीय राजभाषा का दर्जा दिया। लेकिन उसे अमल नहीं किया गया। श्री सिंहदेव ने कहा किखरसावां के विधायक दशरथ गागराई से अनुरोध करता हूं कि स्कूलों में ओडिया शिक्षक की नियुक्ति हो और ओडिया पुस्तक वितरण किया जाए। साथ ही ओडिया अकादमी का गठन कराने में सहयोग करे।

खरसावां राजा गोपाल नारायण सिंहदेव ने कहा कि मातुभाषा अपनी सभ्यता और कला संस्कृति के प्रति हमेशा मनोभाव रखना हम सभी का परम कर्तत्व है। समाज के बिकास में तत्पर रहनेवाले महापुरूष गोपबंधु दास ने अपना पूरा जीवन जनता को समर्पित कर दिया था। उन्होने कहा कि अपने भाषा और कला संस्कृति एवं इतिहास को संजोने का प्रयास करना है। ताकि दुनिया को बता सके कि हमारी संस्कृति सबसे जीवंत और अनूठी है।

ये थे मौजूद

खरसावां विधायक दशरथ गागराई, समाजसेवी बांसती गागराई, प्रमुख मनेंद्र जमुदा, राजा आदित्य प्रताप सिंहदेव, खरसावां गोपाल नारायण सिंहदेव, महारानी अपराजिता सिंहदेव, मुखिया सुनीता तापे, मुखिया मंगल सिंह जामुदा, उप मुखिया सुशीला नायक, भाषा उत्थान एसोसिएशन खरसावां के सचिव नंदू पांडे, मनबोध कुमार मिश्रा, नरसिंह चरण पत्ती, शाम्बो राउत, जीतवाहन मंडल, सरोज मिश्रा, सरोज मिश्रा, तनु

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023